(स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं निर्भीक राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्र)

हिन्दी दैनिक

बुद्ध का संदेश

स्वास्थ्य को नुकसान ..8

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

रविवार, 20 फरवरी 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 09 अंकः 62 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/—रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

शोहरतगढ़ का सियासी पारा गरम, सांसद ने संभाली कमान आज आ रहे जेपी नड्डा

सांसद जगदंबिका पाल ने जनसभा को सफल बनाने के लिए की अपील

राजेश शर्मा/
दैनिक बुद्ध का संदेश
शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। जनपद के विधानसभा शोहरतगढ़ में भाजपा गठबंधन के प्रत्याशी अपना दल से विनय वर्मा जहां अभी तक हल्के नजर आ रहे थे वही डुमरियागंज के सांसद जगदंबिका पाल के मैदान में आ जाने से शोहरतगढ़ का सियासी पारा काफी गर्म हो गया है आज भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के आने से जहां रैली को सफल बनाने मैं बूथ लेवल से लेकर उच्च स्तर तक सांसद जगदंबिका पाल स्वयं देखरेख कर रहे हैं वहीं सांसद जगदंबिका पाल ने अपना दल के प्रत्याशी विनय वर्मा को लेकर लगातार ग्राम स्तर पर जनसंपर्क अभियान छेड़ कर माहौल को गर्म कर दिया है शोहरतगढ़ में जहां लड़ाई केवल 2 के बीच नजर आ रही थी अब वह लड़ाई विनय वर्मा बनाम अन्य की हो चुकी है आपको बता दें कि विनय वर्मा गोरखपुर से आ कर शोहरतगढ़ विधानसभा में चुनाव लड़ रहे थे जहां अभी तक कमजोर नजर आ रहे थे वही सांसद जगदंबिका पाल के आ जाने से माहौल गरम हो गया है शाहा पकड़ी में मंडल अध यक्षों एवं सेक्टर अध्यक्षों व बूथ अध्यक्षों के साथ बैठक करते हुए सांसद जगदंबिका पाल ने कहा कि केंद्र व प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के अंत्योदय की परिकल्पना को साकार करते हुए सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास के संकल्प को लेकर देश व प्रदेश के उत्थान को लेकर ऐतिहासिक कदम उठाए हैं उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में जब से भाजपा की सरकार बनी है तबसे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश पिछले 70 सालों की अपेक्षा आज देश के सर्वोच्च विकसित प्रदेश के रूप में अग्रणी हो चुका है। उन्होंने कहा कि जनपद सिद्धार्थनगर की जनता ने योगी सरकार को एक बार पुनः समर्थन देने का मूड बना लिया है और निश्चित तौर पर आगामी 3 मार्च को जनपद सिद्धार्थनगर के पांच विध ाानसभाओं के सीटों पर भगवा लहराएगा और 10 मार्च को पूरे उत्तर प्रदेश में विकास की जो डोर 2017 से चली आ रही थी वह पुनः स्थापित होगी और शोहरतगढ़ विधानसभा सहित जनपद सिद्धार्थनगर में सभी सीटों पर भाजपा की विजय होगी। आपको बता दें कि पूर्वांचल के नेताओं में सबसे वरिष्ठ सांसद जगदंबिका पाल अपनी लोकप्रियता के लिए काफी माने जाते हैं यही कारण है कि जहां पार्टियों के बेस वोट होते है वही सांसद जगदंबिका पाल के खुद के सपोर्ट के रूप में जनता खड़ी होती है सांसद जगदंबिका पाल के विनय वर्मा के पक्ष में खड़े होने पर भाजपा गठबंधन प्रत्याशी की जीत लगभग सुनिश्चित मानी जा रही है।

जनपद सिद्धार्थ नगर की की पांचो विधानसभा सीटों पर होगी भाजपा की विजयः जगदम्बिका पाल

राजेश शर्मा/
दैनिक बुद्ध का संदेश
सिद्धार्थनगर। शनिवार को कपिलवस्तु विधानसभा के सुकरौली भाजपा विधायकः प्रत्याशी श्यामधनी राही के समर्थन में आयोजित विशाल जनसभा में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष भाजपा,सांसद देवरिया रमापति राम त्रिपाठी ने उपस्थित विशाल जनसमूह को संबोधित किया उन्होंने कहा कि 2017 के विध ाानसभा चुनाव में जिस प्रकार उत्तर प्रदेश के जनमानस ने भारतीय जनता पार्टी को पूर्ण समर्थन देकर उत्तर प्रदेश में पूज्य योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनाई थी उस आशा और विश्वास पर खरा उतरते हुए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने समाज के प्रत्येक वर्ग के विकास को लेकर ऐतिहासिक कदम उठाएं।

● 10 मार्च को बनेगी भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार- रमापति राम त्रिपाठी
● कपिलवस्तु विधानसभा प्रत्याशी श्यामधनी राही के पक्ष में अबकी बार डेढ़ लाख होगा पार-जगदम्बिका पाल।

जिसका परिणाम है कि राज उत्तर प्रदेश में भय भूख और भ्रष्टाचार समाप्त हो रहा है। पिछले समय में जिस प्रकार उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार में निरंतर हो रही लूट हत्या बलात्कार तथा गुंडागर्दी एवं भ्रष्टाचार अपने चरम पर था वही यूपी की भाजपा की योगी सरकार ने इन सभी चीजों पर बुलडोजर चलाते हुए उत्तर प्रदेश की जनता को सुरक्षित करने का कार्य किया है उन्होंने कपिलवस्तु विधानसभा की जनता से आगामी 3 मार्च को कमल के फूल के सामने वाला बटन दबाकर भाजपा प्रत्याशी श्यामधनी राही जी को भारी मतों से विजय दिलाने की अपील की। इस दौरान सांसद जगदम्बिका पाल ने कहा केंद्र व प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के अंत्योदय की परिकल्पना को साकार करते हुए सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास के संकल्प को लेकर देश व प्रदेश के उत्थान को लेकर ऐतिहासिक कदम उठाए हैं उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में जब से भाजपा की सरकार बनी है तबसे मुख्यमंत्री परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश पिछले 70 सालों की अपेक्षा आज देश के सर्वोच्च विकसित प्रदेश के रूप में अग्रणी हो चुका है।

उन्होंने कहा कि जनपद सिद्धार्थनगर की जनता ने योगी सरकार को एक बार पुनः समर्थन देने का मूड बना लिया है और निश्चित तौर पर आगामी 3 मार्च को जनपद सिद्धार्थनगर के पांच विधानसभाओं के सीटों पर भगवा लहराएगा और 10 मार्च को पूरे उत्तर प्रदेश में विकास की जो डोर 2017 से चली आ रही थी वह पुनः स्थापित होगी और कपिलवस्तु विध ाानसभा सहित जनपद सिद्धार्थनगर में सभी सीटों पर भाजपा की विजय होगी। इस दौरान प्रभारी अखिलेश त्रिपाठी विधानसभा संयोजक सुरेंद्र पांडे मंडल अध्यक्ष उसका जगदीश जयसवाल सहित सच्चिदानंद चतुर्वेदी हेमंत जयसवाल , शिवशरण चौरसिया, नितेश पाण्डेय, महेंद्र लोधी, आशीष शुक्ल, अर्चिस्मान मिश्रा, जितेंद्र कुमार, फूलचंद जायसवाल, सरोज शुक्ल,अरुणिमा मिश्रा, ने संबोधित किया। कार्यक्रम में राजाराम लोधी,बिहारी पासवान,चन्द्र शेखर पासवान, चंद्र प्रकाश लाल श्रीवास्तव,ब्रम्हचारी दुबे, विवेक गोस्वामी, मंगलेश ,चीनक, सत्यकुमार, बेचन साहनी,दुर्गेश राय,हरिराम शुक्ल आदि मौजूद रहे।

लोक माध्यमों से गांव तक पहुंचेगी विज्ञान,सभी होगे जागरूक

दैनिक बुद्ध का संदेश
सिद्धार्थनगर। राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली के सहयोग से इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट एण्ड एडवांस्ड स्टडीज लखनऊ द्वारा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान सिद्धार्थ नगर के साथ मिलकर संचार के पारम्पारिक और लोक माध्यमों के द्वारा विद्यार्थियों, शिक्षकों और आम जनता में वैज्ञानिक दृ ष्टिकोण एवं जागरूकता लाने के लिए दिनांक 14 फरवरी से चल रही कार्यशाला का समापन आज दिनांक 19 फरवरी को सफलतापूर्वक हुआ। कार्यशाला के अंतिम दिन आज प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के दौरान खुद से बनाई गयी कठपुतलियों के माध यम से विज्ञान जागरूकता से सम्बंधित नाटकों का मंचन किया। प्रतिभागियों ने, जल है तो कल है। ष्विज्ञान और संचार मिटाएगा अंधकार और ष्एक वृक्ष दस पुत्र समान शीर्षक पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया। विज्ञान नाटक ने मजेदार अंदाज से जब एंसेफ्लाइटिस से बचाव में सफाई के महत्त्व को समझाया तो सभागार ठहाकों से गूँज उठा। ढोंगी बाबा के पोपट ने दर्शकों को अंधविश्वास के दौरान फैली भ्रांतियों के बारे में बड़े ही रोचक तरीके से अवगत कराया और अफवाह से बचने की सीख भी दी।

विज्ञान और संचार किस प्रकार अंधकार मिटाने में सक्षम है इस पर भी नाटक प्रस्तुत किया। कार्यशाला में 35 प्रतिभागियों ने रद्दी अखघ्बारी कागज से लुगदी बनाकर कर पुतुल निर्माण के साथ विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर विशेषज्ञो के मदद से विज्ञान नाटक लिखे। इन विज्ञान नाटकों का मंचन लोक माध्यम पुतुल द्वारा जनपद सिद्धार्थ नगर के 30 गांव के विद्यालयों में किया जाएगा। कार्यक्रम में डायट सिद्धार्थ नगर के प्राचार्य उपेंद्र कुमार ने प्रतिभागियों के प्रयास की सराहना की और कहा कि कठपुतली की कला को जीवित रखने और इसे आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाने में आप सभी की अहम भूमिका होगी, जिन्होंने इस कार्यशाला में न सिर्फ कठपुतली बनाना सीखा बल्कि कैसे कठपुतली के नाटक से लोगों को विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में जागरूक करना है, उसका भी हुनर सीखा। पुतुल विशेषज्ञ नारायण श्रीवास्तव ने बताया कि कठपुतली लोक संचार का एक ऐसा माध्यम है जो आसानी से आम जन को समझ आता है, यह आम बोल चाल की भाषा में बेहद रोचक ढंग से अपना सन्देश उन जगहों और लोगों तक पहुंचाने में सक्षम है जहां पर सोशल मीडिया या मास मीडिया नहीं पहुंच सकता। उन्होंने बताया कि कठपुतली के यह नाटक जो आज प्रतिभागियों ने यहाँ प्रस्तुत किया ऐसा ही नाटक जल्द ही जनपद के गाँवों में भी प्रस्तुत करना है ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी की जागरूकता लाई जा सके। डॉ० वी पी सिंह ने कहा कि आज काफी लम्बे समय बाद कोरोना के खौफ से बाहर निकल कर हमने एक साथ मिलकर कुछ सीखा है। कोर्स और किताबी ज्ञान से हटकर इस कार्यशाला में जो व्यावहारिक ज्ञान सभी को प्राप्त हुआ है यह भविष्य में यकीनन लाभदायक सिद्ध होगा। कार्यशाला संयोजक धर्मेन्द्र कुमार ने कहा कि समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करने में विज्ञान अहम भूमिका निभाता है और वैज्ञानिक तथ्य यदि कठपुतली जैसे रोचक माध्यम से आम जन तक पहुंचे तो उससे बेहतर और क्या हो सकता है।

उन्होंने प्रतिभागियों को स्वयं में समाज कल्याण की भावना का विकास करने का सुझाव दिया और कहा कि वे अपनी इस कठपुतली नाटक प्रस्तुत करने की कला का प्रयोग आज जनता को विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में जागरूक करने के लिए अवश्य करें। कार्यशाला के अंत में संतोष त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मतदाता जागरूकता स्वीप कार्यक्रम सम्पंन

दैनिक बुद्ध का संदेश
सिद्धार्थनगर। जनता विद्या मंदिर इंटर कॉलेज उदयराजगंज सिद्धार्थनगर में मतदाता जागरूकता स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत नाटक एवं प्रहसन का कार्यक्रम किया गया। नाटक के माध्यम से छात्रों को चुनाव से संबंधित जानकारी दी गई एवं अधिक से अधि

ाक वोट देकर लोकतंत्र को मजबूत करने की बात की गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य नरेंद्र कुमार गुप्त, शेष नारायण ओझा, दयाशंकर यादव पंकज कुमार चौधरी, राम बहादुर किरन बाला, सोनाली गुप्ता, भगवती प्रसाद, संतोष कुमार मधुकर, अंजू वर्मा आज शिक्षक उपस्थित रहे।

मतदाता सूची का मिलान कर किया जा रहा है दुरुस्त

दैनिक बुद्ध का संदेश
सिद्धार्थनगर। कपिलवस्तु विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत पड़ने वाले बूथो की मतदाता सूची मिलान कर बूथो पर ले जाने के लिए तैयार

किया जा रहा है। तहसील मुख्यालय नौगढ़ पर मतदाता सूची के प्रत्येक पेज पर रिटर्निंग अफसर के हस्ताक्षर की मोहर लगाई जा रही है। मतदाता सूची के प्रत्येक पन्नों में यह देखा जा रहा है कि किसी मतदाता का फोटो, नाम, उम्र लिंग, उम्र आदि में कोई भिन्नता तो नही है, यदि कोई त्रुटि है उसको दुरुस्त कर रिटर्निंग अफसर के हस्ताक्षर की मोहर लगाई जा रही है। रिटर्निंग आफिसर विकास कश्यप एवं सहायक रिटर्निंग अफसर राम ऋषि रमन तहसील के सभी राजस्व कर्मियों से अपील की है कि निर्वाचन बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है इसमें सभी राजस्व कर्मी टीम भावना के साथ काम करें जिससे चुनाव सकुशल संपन्न कराया जा सके। इस अवसर पर राजस्व निरीक्षक शीतल प्रसाद द्विवेदी, सुरेश तिवारी, अम्बरीश, प्रेम प्रकाश, विजय प्रकाश गुप्ता लेखपाल रामकरन गुप्ता, राहुल, राजेश चाहर, कमलेश, सुधीर, राम शंकर, विनय, संजय, अब्दुल गफ्फार ,देवेन्द्र त्रिपाठी, आशुतोष, परवीन शर्मा, श्रद्धा सुमन, कुमार प्रदीप, रवि पाण्डेय, सुभाष मौर्य, प्रवीण बरनवाल, ज्ञान प्रकाश द्विवेदी, अशोक गुप्ता, अमित, शशांक, आदि मतदाता सूची की वर्किंग कॉपी दुरुस्त कर रहे है।

(स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं निर्भीक राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्र)

हिन्दी दैनिक

बुद्ध का संदेश

स्वास्थ्य को नुकसान ..8

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

रविवार, 20 फरवरी 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्ष: 09 अंक: 62 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

असली समाजवादी हम, राजनाथ बोले– भय से योगी और भूख से मोदी ने दिलाया छुटकारा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी घमासान जारी है। उत्तर प्रदेश में नेता लगातार एक दूसरे पर प्रचार में हमलावर हैं। देश के रक्षा मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह भी लगातार उत्तर प्रदेश में चुनाव प्रचार कर रहे हैं। राजनाथ सिंह केंद्र की मोदी सरकार और राज्य की योगी सरकार के कामकाज को भी गिना रहे हैं। इसी कड़ी में आज गोंडा में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि समाजवादी वो होता है जो जनता को भय और भूख से छुटकारा दिलाए, भय से योगी जी और भूख से मोदी जी ने छुटकारा दिलाया है। असली समाजवादी हम हैं और नकली वो हैं, जो भय और भूख का समाधान करे वो ही सच्चा समाजवादी है। राजनाथ सिंह ने कहा कि अगर बीजेपी सत्ता में आती है, तो हर साल 2 गैस सिलेंडर मुफ्त में दिए जाएंगे, एक होली पर और दूसरा दिवाली पर। हम लड़कियों को उनके स्नातक स्तर की पढ़ाई के दौरान एक स्कूटी भी प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि पंजाब के कांग्रेस के मुख्यमंत्री ने एक बयान दिया कि यूपी बिहार के लोगों को घुसने नहीं देंगे। और कांग्रेस की नेता वह खड़ी तालियाँ बना रही थीं। कांग्रेस के लोगों से पूछिए कि वहाँ दूसरी भाषा और यहाँ दूसरी भाषा क्यों बोल रहे है? यह लोग बाँटने की राजनीति कर रहे हैं। इससे पहले पूर्व भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अंतर्गत छह हजार रुपया किसानों को मिल रहा है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार बना दीजिए छह हजार रुपये और यानि 1200 रुपए प्रति वर्ष मिलेंगे। इसी को कहते हैं घर में लक्ष्मी का आना। राजनाथ ने कहा कि भ्रष्टाचार पर अंकुश भाषण देकर नहीं लगाया जा सकता। इसके लिए सिस्टम में बदलाव लाने की जरूरत है। यह काम भाजपा सरकारों ने करके दिखाया है। राजनीतिक विश्लेषकों ने दो चरणो के चुनाव के बाद यह अनुमान लगाया है की दस मार्च को फिर से भाजपा सरकार बनाने जा रही है।

भाजपा आपके भरोसे को टूटने नहीं देगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी को संसद में यह कहते हुए देखकर दुख होता है कि (गलवान) संघर्ष में बड़ी संख्या में भारतीय सैनिक और केवल 3–4 चीनी सैनिक मारे गए। रक्षा मंत्री होने के बावजूद मैंने जवाब नहीं दिया क्योंकि पीएम ने कहा कि लोगों को बोलने दो। लेकिन हम हकीकत जानते हैं।

एसपी बघेल बोले- मुलायम सिंह यादव स्वेच्छा से करहल नहीं आए, उन्हें जबरदस्ती प्रचार के लिए लाया गया

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर प्रचार लगातार जारी है। दो चरण के चुनाव हो चुके हैं। तीसरे चरण के लिए मतदान 20 फरवरी को होगा। तीसरे चरण में ही मैनपुरी की करहल सीट पर भी चुनाव होने हैं। करहल सीट फिलहाल हॉट सीट बन चुकी है। करहल सीट से समाजवादी पार्टी के प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव अपनी चुनावी किस्मत आजमा रहे हैं। जबकि अखिलेश को करहल से भाजपा के केंद्रीय मंत्री एसपी सिंह बघेल चुनौती रहे हैं। करहल में भाजपा और समाजवादी पार्टी की ओर से खूब प्रचार भी किया गया। समाजवादी पार्टी ने करहल में अपनी पूरी ताकत झोंक दी। खुद वयोवृद्ध थे मुलायम सिंह यादव को भी प्रचार में आना पड़ा। वही अखिलेश यादव भी लगातार करहल में प्रचार करते रहे। अब इसी को लेकर करहल में अखिलेश के खिलाफ ताल ठोक रहे एसपी सिंह बघेल ने बड़ा दावा किया है। एसपी सिंह बघेल ने दावा किया कि मुलायम सिंह यादव स्वेच्छा से करहल नहीं आए बल्कि उन्हें जबरदस्ती लाया गया। न्यूज एजेंसी ए एन आई के मुताबिक एसपी सिंह बघेल ने कहा कि मुलायम सिंह यादव स्वेच्छा से करहल नहीं आए थे। उन्हें जबरदस्ती चुनाव प्रचार के लिए वहां लाया गया। उन्होंने कहा कि अगर वह सपा के संरक्षक होते तो अन्य कमजोर उम्मीदवारों के लिए भी प्रचार करने जाते लेकिन वह ऐसा नहीं कर रहे हैं। अखिलेश पर हमला करते हुए बघेल ने कहा कि बच्चे बुजुर्ग माता–पिता का सहारा बन जाते हैं लेकिन वह (अखिलेश यादव) पहले बच्चे हैं जो चुनाव में खुद को हारने से बचाने के लिए अपने बड़े और बीमार पिता की मदद ले रहे हैं, हमें भारतीय राजनीति में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलेगा। बघेल ने कहा कि अखिलेश यादव उस जहाज के कप्तान हैं जो डूब रहा है और वह उससे भाग रहा है, इसलिए उसे अब पूर्व कप्तान (मुलायम सिंह यादव) की मदद की जरूरत है, जिसे उन्होंने 2017 में कप्तानी से हटा दिया था। आपको बता दें कि भाजपा ने भी करहल में पार्टी की जीत का दावा किया है। भाजपा की ओर से खुद अमित शाह और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ चुनाव प्रचार कर चुके हैं। करहल यादव बहुल सीट है। इसे अखिलेश यादव के लिए सेफ सीट माना जा रहा था। हालांकि भाजपा ने यहां अखिलेश को कड़ी चुनौती दी है। एसपी सिंह बघेल फिलहाल केंद्र सरकार में मंत्री हैं। एसपी सिंह बघेल कभी मुलायम सिंह यादव की सुरक्षा में तैनात हुआ करते थे।

अजित पवार ने कहा– मराठों को आरक्षण देने के लिए 50 फीसदी आरक्षण सीमा को हटाने की जरूरत

पुणे (महाराष्ट्र), महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने शनिवार को कहा कि आरक्षण पर 50 प्रतिशत की सीमा हटाने की आवश्यकता है ताकि मराठा समुदाय को आरक्षण दिया जा सके। साथ ही उन्होंने इसके लिए केंद्र सरकार से कानून में बदलाव करने का अनुरोध किया राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के वरिष्ठ नेता ने कहा कि मराठा समुदाय को आरक्षण मिलना चाहिए लेकिन यह अन्य समुदायों के मौजूदा आरक्षण में छेड़छाड़ किए बिना होना चाहिए। वह छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती के मौके पर पुणे जिले की जुन्नर तहसील में शिवनेरी किले में बोल रहे थे। मराठा योद्धा शासक का जन्म 1630 में इसी किले में हुआ था। इस मौके पर पवार ने कहा, मराठा समुदाय को आरक्षण देने के लिए हम सभी की राय एक है। हमने (राज्य सरकार) इस उद्देश्य के लिए एक आयोग भी गठित किया था। बंबई उच्च न्यायालय ने हमारे पक्ष में फैसला दिया था लेकिन उच्चतम न्यायालय ने इसे खारिज कर दिया था। उन्होंने कहा, जैसे कि यहां महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण की मांग है तो कुछ अन्य राज्यों में अन्य समुदाय भी अपने लिए आरक्षण मांग रहे हैं। मराठा समुदाय को आरक्षण मिलना चाहिए लेकिन अन्य समुदाय के आरक्षण में छेड़छाड़ किए बिना ऐसा होना चाहिए। आरक्षण पर 50 फीसदी की सीमा को हटाने की आवश्यकता है और केंद्र सरकार को इसके लिए कानून में बदलाव करने चाहिए। जुन्नर क्षेत्र में उगाए जाने वाले अल्फांसो आम के बारे में उन्होनें कहा, जिला योजना समिति ने 27 लाख रुपये आवंटित किए है ताकि आम की इस किस्म को भौगोलिक संकेत (जीआई) का टैग मिले, जिसकी स्थानीय लोग लंबे समय से मांग कर रहे हैं। कोरोना वायरस महामारी के मद्देनजर राज्य सरकार ने किले में कार्यक्रम में भाग लेने के लिए केवल 500 लोगों को अनुमति दी है जबकि शिव ज्योति रन में केवल 200 लोगों को भाग लेने की मंजूरी दी गयी है। महाराष्ट्र के पर्यटन एवं पर्यावरण मंत्री आदित्य ठाकरे, गृह मंत्री दिलीप वालसे पाटिल, राजस्व मंत्री बालासाहेब थोराट समेत अन्य नेता भी कार्यक्रम में शामिल हुए। शिवाजी महाराज के वंशज एवं भारतीय जनता पार्टी के सांसद संभाजी छत्रपति ने भी किले का संक्षिप्त दौरा किया।

आतंकवाद पर भाजपा की जीरो टॉलरेंस नीति, अनुराग ठाकुर बोले– सपा फुल संरक्षण की रखती है सोच

नयी दिल्ली। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने शनिवार को भाजपा मुख्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से समाजवादी पार्टी (सपा) पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के मामले में भाजपा जीरो टॉलरेंस जबकि सपा फुल संरक्षण की सोच रखती है। उन्होंने कहा कि अहमदाबाद सीरियल ब्लास्ट मामले के तार सीधे उत्तर प्रदेश के सपा के नेताओं के साथ जुड़े हुए हैं। इसी वजह से पिछले कुछ दिनों में अदालत का फैसला आने के बाद भी सपा के नेता चुप हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सपा की चुप्पियां एक बार फिर आतंकवादियों के संरक्षण की ओर उंगली उठाती हैं। उन्होंने कहा कि 2008 अहमदाबाद सीरियल ब्लास्ट में 56 लोगों की मृत्यु हुई, सैकड़ों लोग घायल हुए। न्यायालय की हाल ही में आए फैसले का हम स्वागत करते हैं, भाजपा स्वागत करती है। जिसमें 49 आरोपियों को सजा सुनाई गई, 28 आतंकियों को फांसी की सजा और 11 को उम्रकैद की सजा सुनाई गई।

उन्होंने कहा कि ये तब हो पाया जब गुजराज के मुख्यमंत्री मोदी जी थे। एसआईटी का गठन हुआ, मात्र 19 दिनों में आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई की गई। सबूत पहुंचाने से लेकर आतंवादियों को पकड़ने तक मोदी जी की सरकार ने उस समय काम किया और आज भी आतंकवाद को जड़ से मिटाने के लिए मोदी सरकार वचनबद्ध है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि साल 2012 के उत्तर प्रदेश चुनाव से पहले सपा के घोषणा पत्र में सीधे–सीधे लिखा था कि मुस्लिम युवाओं के खिलाफ आतंकवाद के जो चार्ज(मामले) हैं उन्हें वापस लिया जाएगा और जिन पुलिसकर्मियों ने उनके खिलाफ चार्जिज लगाए हैं उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

इसी बीच केंद्रीय मंत्री ने अखिलेश के साथ की एक तस्वीर दिखाते हुए कहा कि इन 49 दोषियों में से एक मोहम्मद सैफ सपा नेता शादाब अहमद के बेटे हैं। इस पर अखिलेश चुप क्यों हैं? इन तस्वीरों में वह तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के साथ नजर आ रहे हैं। क्या अखिलेश यादव ने उन्हें बिरयानी पर बुलाया था?

व्यापम घोटाले को लेकर सीबीआई ने 160 आरोपियों के खिलाफ दायर की चार्जशीट, अब तक 650 आरोपियों पर दायर हुई है चार्जशीट

भोपाल। सीबीआई ने बड़ी कार्यवाही करते हुए व्यापम परीक्षा और भर्ती में 2013 प्री मेडिकल टेस्ट में धांधली करने के आरोप में एमपी के तीन मेडिकल कॉलेजों के अध्यक्षों समेत 160 आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दायर की है। इसी के साथ घोटाला करने वाले 650 आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दायर की जा चुकी है। दरअसल सीबीआई के विशेष अभियोजक सतीश दिनकर ने कहा कि व्यापम से संबंधित मामलों की सुनवाई कर रहे नितीरात सिंह सिसोदिया की विशेष सीबीआई कोर्ट में गुरुवार को आरोप पत्र दायर किया गया। इसमें एमपी के पूर्व नियंत्रक पंकज त्रिवेदी, मध्य प्रदेश व्यवसायिक परीक्षा मंडल और राज्य चिकित्सा शिक्षा निदेशालय के दो अधिकारियों समेत 160 नए आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दायर की गई है। दिनकर ने कहा कि 56 उम्मीदवारों ,46 व्यक्तियों मोडिकल कोर्स के लिए उम्मीदवारों के 13 अभिभावकों और 9 बिचौलियों को भी चार्जशीट में शामिल किया गया है। उन्होंने कहा कि आरोपियों के खिलाफ धारा 120, 420, 467, 468 और अन्य प्रासंगिक मामलों के तहत आरोप पत्र दायर किया गया है।

हिजाब विवाद:माथे पर सिंदूर लगाकर आई छात्रा को कॉलेज में नहीं दिया गया घुसने, कहा- इससे हिजाब और भगवा शॉल की तरह ही हो जाएगा विवाद

कर्नाटक में हिजाब विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। यहां के विजयपुर शहर में माथे पर सिंदूर लगाकर आई एक छात्रा को कॉलेज परिसर में प्रवेश करने की इजाजत नहीं दी गई और साथ ही छात्रा से सिंदूर हटाने के लिए कहा गया। छात्रा को कॉलेज के अध्यापकों द्वारा गेट पर रोक कर कॉलेज में प्रवेश करने से पहले सिंदूर मिटाने को कहा गया। कॉलेज अध्यापकों की ओर से छात्रा को बताया गया कि माथे पर प्रथागत सिंदूर लगाकर कॉलेज में प्रवेश करने से हिजाब और भगवा शॉल की तरह ही परेशानी पैदा कर सकता है। राज्य में चल रहे हैं हिजाब विवाद को देखते हुए कर्नाटक हाई कोर्ट के अंतरिम आदेश और राज्य सरकार के आदेश के मुताबिक कॉलेजों में हिजाब और भगवा शॉल के इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी गई है। हालांकि इन आदेशों में माथे पर सिंदूर लगाने की मनाही नहीं है। कर्नाटक हाईकोर्ट में राज्य सरकार के आदेश को चुनौती देने वाली मुस्लिम लड़कियों के वकीलों ने सुनवाई के दौरान यह तर्क दिया था कि हिजाब पहनना एक धार्मिक रिवाज है, जैसे कि माथे पर सिंदूर लगाना और हाथों में चूड़ियां पहनना। कोर्ट में मुस्लिम लड़कियों के वकीलों के द्वारा यह भी कहा गया कि सिखों द्वारा पगड़ी पहनना और रुद्राक्ष पहनना भी धार्मिक रिवाज का हिस्सा हैं।

जम्मू कश्मीर: शोपियां में मुठभेड़ में एक आतंकी मारा गया, दो जवान शहीद

श्रीनगर, जम्मू कश्मीर के अत्यधिक संवेदनशील शोपियां जिले में शनिवार को मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया और सेना के दो जवान शहीद हो गए। अधिकारियों ने यहां बताया कि शोपियां में जैनापुरा इलाके के चेरमार्ग में आतंकवादियों की मौजूदगी की खुफिया सूचना मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने इलाके की घेराबंदी की और वहां तलाश अभियान चलाया। उन्होंने बताया कि जब सुरक्षा बल इलाके में तलाश अभियान चला रहे थे तभी वहां छिपे आतंकवादियों ने उन पर गोलियां चला दीं। सुरक्षाबलों ने भी जवाबी कार्रवाई की, जिसके बाद मुठभेड़ में सेना के दो जवानों की मौत हो गयी। उन्होंने बताया कि सुरक्षा बलों ने एक आतंकवादी को भी मार गिराया। मृतक आतंकवादी की पहचान अभी नहीं हुई है।

भाजपा ने आशीष मिश्रा को जल्दबाजी में दी जमानत, अखिलेश बोले– कृषि कानून की तरह योगी को भी जाना होगा वापस

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव को लेकर आरोप–प्रत्यारोप की राजनीति तेज हो गई है। इसी बीच समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव ने शनिवार को लखीमपुर खीरी में एक जनसभा को संबोधित करते हुए सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि भाजपा ने आरोपी आशीष मिश्रा को जल्दबाजी में जमानत दे दी क्योंकि उन्हें पता था कि उत्तर प्रदेश में सरकार बदलने जा रही है। कृषि कानून वापस लिए गए तो योगी आदित्यनाथ को भी वापस जाना होगा।

उन्होंने कहा कि मंत्री पुत्र ने किसानों को जीप से कुचला है। तेजिंदर विर्क जी का शांतिपूर्ण आंदोलन था। वो घटना आजाद भारत में जलियांवाला बाग की घटना की याद दिला रही है। जनता की अदालत में इन्हें जमानत नहीं मिली है। भाजपा की जमानत जब्त होने वाली है।

सपा प्रमुख ने कहा कि पहले और दूसरे चरण में ही समाजवादी पार्टी गठबंधन ने शतक बना लिया है। जब तीसरे और चौथे चरण के वोट पड़ जाएंगे तो एक और शतक लग जाएगा। लखीमपुर में इनके (भाजपा) बूथों पर मक्खी मारने वाला भी नहीं मिलने वाला है। उन्होंने कहा कि चौथे चरण के समापन तक जनता सपा गठबंधन को पूर्ण बहुमत देगी। उन्होंने (भाजपा) उत्तर प्रदेश में किसानों की आय दोगुनी करने का वादा किया था। प्रदेश के एक भी किसान को उनकी योजनाओं का लाभ नहीं मिला है। सपा प्रमुख ने कहा कि समाजवादी सरकार बनी तो ज्यादा से ज्यादा लोगों को योजनाओं का लाभ दिया जाए। उन्होंने कहा कि महंगाई बढ़ गई है ऐसे में बुजुर्ग महिलाओं को 1500 रुपए महीना भी देना पड़ा तो दिया जाएगा। हमने बहुत सी बातें लिखकर रखी हुई है। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने किसानों की जान ली है उन्हें भगवान भी माफ नहीं करेंगे। ऐसे में हम और आप भी माफ नहीं करेंगे।

उन्होंने कहा कि 300 यूनिट फ्री बिजली मिलेगी। सिंचाई के लिए फ्री बिजली देंगे। सपा ने यहां एग्रीकलचर कॉलेज बनाया था। आने वाले समय में मंडियों को बेहतर करेंगे। जिससे किसानों की फसलों की एमएसपी पर खरीद हो जाए। उन्होंने कहा कि गन्ना किसानों का अभी भी बकाया भुगतान नहीं हुआ है। हम कह कर जा रहे हैं कि आपके गन्ने के भुगतान के लिए अलग से कॉरपस फंड बना रहे हैं ताकि आपको कभी धरना देने की जरूरत ना पड़े।

सम्पादकीय

इसमें तालिबान के सत्ता में काबिज होने के बाद इजाफा बताया जा रहा है। दरअसल, आर्थिक संकट से जूझते अफगानिस्तान में नशीले पदार्थ आय का बड़ा जरिया बनते जा रहे हैंय जिसको लेकर पूरी दुनिया चिंतित है। इसी कारण अभी तक दुनिया के किसी देश ने अफगानिस्तान को मान्यता नहीं दी है। एनसीबी के ...

नशे का नश्तर

देश के विभिन्न हिस्सों में नशीले पदार्थों की बरामदगी में तेजी आना हमारी गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए। सबसे बड़ी चिंता यह है कि नशे की अंतर्राष्ट्रीय तस्करी में सूचना व तकनीक के आधुनिक तौर–तरीकों का सहारा लिया जा रहा है, जिसके चलते यह जांच एजेंसियों की पकड़ में आसानी से नहीं आ पाती। इतना ही नहीं, कोरोना संकट के काल में बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थों का कारोबार कुख्यात इंटरनेट प्लेटफॉर्म डार्कनेट और समुद्री मार्ग के जरिये बढ़ा है। इसके लिये कूरियर सेवाओं के जरिये भी नशीले पदार्थों की आपूर्ति की जाती रही है। देश में हेरोइन की बरामदगी तीन गुना से अधिक हो गई है। जहां वर्ष 2017 में 2,146 किलोग्राम हेरोइन बरामद हुई थी, वहीं वर्ष 2021 में इसकी मात्रा 7,282 किलोग्राम तक जा पहुंची। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो यानी एनसीबी का दावा है कि प्रभावी कार्रवाई के चलते नशीले पदार्थों की बरामदगी में तेजी आई है। हालांकि नशे के तस्कर कार्रवाई करने वाली एजेंसियों से बचने के लिये लगातार तस्करी के तौर–तरीके बदलते रहते हैं। इंटरनेट में काले धंधों के बदनाम इंटरनेट प्लेटफॉर्म डार्कनेट के जरिये नशे की तस्करी दुनियाभर के देशों के लिये चिंता बढ़ाने वाली है। विशेष सॉफ्टवेयरों का उपयोग करने वाले तस्करों तक पहुंच बनाना सहज नहीं हो पाता, जो जांच अधिकारियों के लिये एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। बताया जाता है कि डार्कनेट बाजार में नब्बे प्रतिशत बिक्री कथित तौर पर नशीले पदार्थों से संबंधित है। तस्कर आधुनिक तकनीकों का सहारा लेकर कानून–व्यवस्था की आंख में धूल झोंकने में कामयाब हो जाते हैं। ऐसे में सरकारी एजेंसियों को साइबर मोर्चे पर इस खेल पर अंकुश लगाने के लिये उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल करना होगा, क्योंकि आने वाले समय में इस चुनौती में विस्तार ही होगा।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहद ताकतवर माफियाओं को कुछ सरकारों की मदद इस समस्या को जटिल बनाने का ही काम करती है, जो साझा अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों से ही दूर की जा सकती है। हाल ही के दिनों पंजाब व जम्मू कश्मीर में नशीले पदार्थों की तस्करी में परंपरागत तौर–तरीकों के साथ ही आधुनिक तकनीक का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। बीएसएफ द्वारा बड़ी मात्रा में हेरोइन की बरामदगी इन आशंकाओं की पुष्टि करती है। अटारी–वाघा सीमा पर 532 किलोग्राम हेरोइन बरामद होने के दो साल बाद दिसंबर, 2021 में गुजरात तट पर एक पाकिस्तानी नाव से 77 किलोग्राम हेरोइन की जब्ती को सुरक्षा खतरे के मद्देनजर नार्को आतंकवाद पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। सीमा पर सख्ती के चलते आतंकवादियों को हथियार व गोला–बारूद जुटाने में मदद के लिये नशे की खेपों का इस्तेमाल किया जा रहा है। यहां तक कि बड़े पैमाने पर ड्रोनों का इस्तेमाल भारतीय क्षेत्रों में नशे की खेप पहुंचाने के लिये किया जा रहा है। पिछले साल सितंबर में गुजरात के कच्छ इलाके में मुन्दरा बंदरगाह पर करीब 3000 किलोग्राम हेरोइन की बरामदगी ने देश को चौंकाया था, जो बताता है कि नशे की तस्करी के लिये समुद्री मार्गों का भी लगातार इस्तेमाल हो रहा है। भारत को यह शिपमेंट अफगानिस्तान से ईरान के रास्ते भेजा गया, जो यह बताता है कि नई पीढ़ी को पथभ्रष्ट करने के लिये किस तरह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साजिशें हो रही हैं। यह सुनियोजित अंतर्राष्ट्रीय ड्रग सिंडिकेट की भागीदारी की ओर इशारा करता है। इस बड़ी साजिश की व्यापक जांच की जरूरत है ताकि नशे के कारोबार की बड़ी मछलियों पर नकेल कसी जा सके। एशिया ही नहीं, पूरी दुनिया में नशीले पदार्थों की आपूर्ति अफगानिस्तान से की जाती रही है।

वे बिके क्योंकि बिकना उनकी नियति

भूपेन्द्र भारतीय

वे बिक गए, बिकना ही था। पूंजीवाद के दौर में क्या नहीं बिक रहा है! आजकल यह बिकने का खेल वैश्विक बाजार की जरूरत हो गया है। बिकने की कला जिसे आ गई, वह रातोरात जीरो से हीरो बन सकता है। बिकने के खेल में, चतुर लोग गंजे को कंघी बेच रहे हैं। बस आपका कुछ न कुछ भाव–ताव व किसी ओर झुकाव होना चाहिए, आपको बिकने से कोई नहीं रोक सकता है। किसी की मजाल कि आजकल कोई किसी को बिकने से रोक सके। जब दसों दिशाओं में बाजार गुलजार हैं तो फिर कुछ न कुछ बिकने के लिए ही बाजार सजा है! अब बाजार में कोई खेल के माध्यम से बिके या फिर बिकने का खेल खेल रहे हैं। वहीं बहुत से होनहार–बिरवान नौजवान बेरोजगारी के नाम पर जॉब फेयर या फिर कॉलेज प्लेसमेंट में भी बिक रहे हैं! आखिरकार अपने भाव का मान रखने के लिए थोड़ा–बहुत तो बिकना ही पड़ता है। और कोई नेता किसी तरह की टिकट पाने के लिए पूरा ही बिक जाए तो वह जनता की सेवा के नाम पर ही बिकता है! मंडी की बात करें तो मंडी सिफर्ध राजनीति की ही नहीं होती, वह कई प्रकार की हो सकती है। अनाज सब्जी, पालतू पशु जानवर आदि की मंडी अब पुरानी बात हो गई। अब बेरोजगारों व बड़े पैकेज की मंडियों का जमाना है। इन मंडियों में आजकल प्रतिभाओं की बोलियां लगती हैं! कुछ प्रतिभाएं असली होती हैं और कुछ अपने जुगाड़ व जोड़तोड़ से इन मंडियों में बिकने को स्वयं को प्रतिभाशाली बनाकर प्रस्तुत हो जाती हैं। रुपये व आदमी का जैसे–जैसे मूल्य घट रहा है, नई–नई प्रतिभाएं बिकने को बढ़ रही हैं। पुराने खनकदार सिक्के तो अब बाजार में कम ही दिखते हैं। जो थोड़े–बहुत बचे हैं उन्हें नये सेठों ने मार्गदर्शक मंडल रूपी लॉकर में डाल रखा है। कुछ सिक्के बरसों से बिकने को बैठे हैं लेकिन उन्हें कोई खरीदार ही नहीं मिल रहा है। ये बार–बार ट्विटर बाजार में अपने बिकने की तख्तियां लेकर खड़े हो जाते हैं, पर इन्हें यह कहकर बिठा दिया जाता है कि पहले अपना भाव बढ़ाओ फिर बाजार में बिकने आना। इन बेचारों को पता ही नहीं है कि भाव कैसे बढ़ाया जाता है। शायद इन्हें अब तक डिजिटल करेंसी का पता नहीं चला है। सोशल मीडिया की भी कम जानकारी रखते हैं, नहीं तो कब के बिक जाते। इधर जब से सोशल मीडिया की मंडी का उदय हुआ, पूंजीवाद व बाजारवाद के लिए जैसे स्वर्णिम काल आ गया हो। इस मंडी के कारण श12 साल में तो घुरे के भी दिन फिरते हैंय वाली लोकोक्ति सच हो गई है। श्कंडे से लेकर कलम तक इस मंडी में शान से बिक रहे है।य वहीं बार–बार सोशल मीडिया के मंचों से बिकने वाले कह रहे हैं! बिकने की उनकी मजबूरी भी है। वे बेचारे नहीं बिके तो फिर क्या करें? आखिर कब तक विपक्ष में बैठे रहें। उन्हें हमेशा से ही लोकतंत्र के गुलजार बाजार में रहने की आदत रही है। उन्हें बड़े सेठों के हाथों में रहना ही पसंद आया है। मेरे एक प्रौढ़ मित्र का तो यहां तक कहना है कि श्जो इस बाजार में जैसे–तैसे बिक गया, सो बच गया।य इसलिए ही श्वे बिक रहे हैं, क्योंकि उन्हें श्जनता की सेवाय के लिए जिंदा जो रहना था...!य

बेटियों को खुले विचारों की उन्मुक्तउड़ान दीजिए

याद रखिए घायल की गति घायल जानता है, उपदेश देने वाले नहीं। आज उस मानसिकता को बदलना होगा, जिसमें एक घूंघट समर्थक और एक बुर्का समर्थक यह कहता है कि औरत और दौलत दोनों को ढक कर रखना चाहिए। हमारे देश की संस्कृति तो यह है कि दौलत घर में बढ़ जाए तो दोनों हाथों से बांटिए, ढक कर नहीं रखिए। महिलाएं घर में बंद रखी गईं तो आधा समाज पक्षाघात का शिकार होकर ...

लक्ष्मीकांता चावला

कर्नाटक के एक स्कूल में हिजाब को यूनिफार्म का हिस्सा मानने से इनकार करने पर विवाद उठा तो राजनीतिक दलों को वोट की राजनीति करने का मौका मिल गया। इसे कहते हैं बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना। निस्संदेह यह विषय तो शिक्षा क्षेत्र का था–विद्यार्थी क्या चाहते हैं, स्कूल प्रबंधन ने क्या तय किया और हिजाब पहनने वाले माता–पिता की राय क्या है, पर पांच राज्यों के चुनाव के बीच राजनेता कैसे चुप रहते? कर्नाटक से निकलकर हिजाब से लाभ उठाने का मुद्दा पूरे देश में फैल गया।?बयानबाजी भी शुरू हो गई। धर्मगुरु भी इसमें पीछे नहीं रहे।

अफसोस तो यह है कि जिस कांग्रेस की एक वरिष्ठ नेता श्लड़की हूं, लड़ सकती हूंय का नारा लिये यूपी से लेकर पंजाब तक घूम रही हैं, उसी कांग्रेस के कर्नाटक के प्रधान जमीर अहमद ने यह घोषणा की कि बच्चियों की सुंदरता को छिपाकर रखने के लिए बुर्का, हिजाब जरूरी हैं।

इसके साथ उन्होंने बहुत कुछ ऐसा कहा जो न महिलाओं के सम्मान को बढ़ाने वाले वक्तव्य हैं और न ही पार्टी के। आज हमारा देश, हमारा समाज उस मध्ययुगीन काल में नहीं है जब विदेशी आक्रांता आकर हमारी बहू–बेटियों से क्रूरता करते थे और उन्हें लूट का मामला समझकर ले जाते थे। घूंघट या बुर्का उसी वातावरण में पैदा हुए जब विदेशियों से देश जूझ भी रहा था और समाज त्रस्त भी था। मेरा एक प्रश्न जमीर साहब से है कि क्या उन्हें ऐसा लगता है कि लड़की की सुंदरता को देखकर कुछ पुरुष गिद्ध झपट लेंगे। अगर यह सच भी है तो कुछ पथभ्रष्टों के अनाचार के कारण सारी महिलाओं को क्यों आवरण दिया जाये। निस्संदेह जो अनैतिक लोग हैं, उन्हें कानूनन सजा दी जाए।

मैं यह मानती हूं कि बुर्का और घूंघट दोनों ही महिलाओं के साथ अन्याय हैं। भले ही इसके लिये सामाजिक, सांस्कृतिक तर्क दिये जाएं और धर्म का सहारा लिया जाये।

एक बार पुनरू मैं यह कहती हूं कि विदेशी मुस्लिम आक्रमणों से पहले देश में न बुर्का था, न घूंघट। हमारे देश की बेटियां महारानी झांसी, महारानी कर्मावती, जवाहर बाई, चन्ना मां किसी घूंघट में बंद होकर शत्रुओं से लोहा नहीं लेती रहीं। युगों पहले तक स्वयंवर की प्रथा इस देश में थी।

सैकड़ों वीर समर्थ पुरुष, राजा पंक्तिबद्ध सामाजिक अनुशासन में बैठते थे। उनमें से एक पुरुष को पति के रूप में चुनकर जयमाला डालने का केवल हमारे देश में ही प्रचलन था। यह स्वयंवर बुर्के और घूंघट में नहीं होता था।

आज प्रश्न केवल हिजाब का नहीं, प्रश्न यह है कि बहुत–सी लड़कियां, कुछ धर्म के ठेकेदारों से प्रभावित, इन बंधनों की वकालत करने के लिए सड़कों पर आ जाती हैं।

वर्षों पहले राजा राममोहन राय जी ने जब सती प्रथा बंद करवाई थी, उस समय भी हमारे समाज के एक भाग ने विरोध किया था। आज 21वीं शताब्दी में भी जब लड़कियां हिजाब या शबरीमाल मंदिर में महिलाओं को प्रवेश न देने के समर्थन में निकलती हैं तो बहुत अफसोस होता है। उनकी मानसिकता अभी भी उनसे प्रभावित है जो महिलाओं को बेडियों में बांधकर रखना चाहते हैं। शायद मन ही मन उनकी उन्नति से आहत भी होंगे।

सत्य यह है कि जब तक पीडिघ्त अपनी पीड़ा से मुक्ति नहीं चाहता तब तक कानून और राजनीति कुछ नहीं कर सकती। वर्तमान केंद्रीय सरकार ने मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक और हलाला से मुक्ति दिलाई। यह स्वीकार करना होगा कि भारत सरकार का तीन तलाक बंद करने वाला कानून उस बल से ही पारित हुआ जो शक्ति लाखों मुस्लिम महिलाओं ने आगे बढ़कर तीन तलाक के विरुद्ध आवाज उठाकर दी थी।

अभी पुरानी बात नहीं जब शिगनापुर श्रीशनि मंदिर में महिलाओं के प्रवेश के विरुद्ध एक महिला के नेतृत्व में ही आंदोलन हुआ और सफल भी हुआ। बात हिजाब की हो, घूंघट की हो या फिर मंदिर या मस्जिद में किसी बंधन की, जो इन असंवैधानिक आदेशों से प्रभावित हैं जब तक वे आगे नहीं आएंगे तब तक मुक्ति भी नहीं मिलेगी।

जो घूंघट के प्रबल समर्थक हैं वे उन महिलाओं को देखें जो लंबा घूंघट निकालकर सड़कों पर मजदूरी करती हैं, बच्चा गोद में उठाकर सिर पर पानी के तीन–तीन घड़े उठाकर काम कर रही हैं, और भी बहुत कुछ। याद रखिए घायल की गति घायल जानता है, उपदेश देने वाले नहीं। आज उस मानसिकता को बदलना होगा, जिसमें एक घूंघट समर्थक और एक बुर्का समर्थक यह कहता है कि औरत और दौलत दोनों को ढक कर रखना चाहिए। हमारे देश की संस्कृति तो यह है कि दौलत घर में बढ़ जाए तो दोनों हाथों से बांटिए, ढक कर नहीं रखिए। महिलाएं घर में बंद रखी गईं तो आधा समाज पक्षाघात का शिकार होकर क्षीण–दीन हो जाएगा। भारत की बेटी सिंहवाहिनी है। 1400 वर्ष पहले तक जब महिलाओं पर इस तरह के प्रतिबंध नहीं थे, तब भी हम दुनिया में भारती मिश्र की तरह शास्त्रार्थ करती थीं। वेद मंत्रों की रचयिता थीं और अपने बच्चों को शेरों के साथ खिलाती थीं।

मुश्किलों के भंवर में उलझते इमरान

आगामी 18 महीनों में हमें पाकिस्तान के अंदर महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिलेंगे। जनरल बाजवा की सेवानिवृत्ति सितंबर माह में होनी है। इस बीच विपक्षी दल इमरान खान की सरकार गिराने को दलबदल को शह देने में लगे हैं। लेकिन जब तक तमाम संबंधित पक्षों को सेना की हरी झंडी न मिले तब तक यह प्रयास सफल नहीं होंगे। इसके अलावा जनरल बाजवा को 22 सितंबर, 2022 तक...

जी. पार्थसारथी

पाकिस्तान की राजनीति में इमरान खान का प्रवेश और उद्भव पूर्ववर्ती दिग्गजों, मोहम्मद अली जिन्नाह, जुल्फिकार अली भुट्टो, बेनजीर भुट्टो और नवाज शरीफ की बनिस्बत अलग किस्म का है। राजनीति में उनकी आमद और उभार किसी पार्टी के जरिए न होकर आईएसआई के पूर्व मुखिया ले. जनरल हमीद गुल की भूमिका से ज्यादा है। हमीद गुल से मेरी मुलाकात और संवाद लाहौर में उस दौरान हुआ था जब कारगिल युद्ध पूरे उफान पर था। अंदर की कई बातों के अलावा उन्होंने बताया कि किस तरह लंबे समय तक सैनिक तानाशाह और राष्ट्रपति रहे जनरल जिया–उल–हक ने निष्ठुर होकर राज चलाया था। जनरल जिया के निजाम में कट्टरवादी इस्लामिक रीतियों–नीतियों वाली नीति राष्ट्रीय तौर पर अपनाई गई। तत्कालीन आईएसआई महानिदेशक हमीद गुल ने कट्टरवादी इस्लामिक गुटों का इस्तेमाल कर अफगानिस्तान और जम्मू–कश्मीर में आतंकी अभियान चलाने में सक्रिय भूमिका निभाई थी। खुद को उदारवादी दिखाने के प्रयासों के बावजूद, कैम्ब्रिज से पढ़–लिखकर लौटे और क्रिकेटर रहे इमरान खान का हमीद गुल के साथ निकट संबंध था, जो कि तहरीक–ए–इंसाफ पार्टी के संस्थापकों सदस्यों में एक थे। कोई हैरानी नहीं कि इस्लामिक विचारधारा से ओत–प्रोत इमरान खान की पार्टी तहरीक–ए–इंसाफ की स्थापना पाकिस्तानी सेना की मदद से हुई है। हमीद गुल के मार्गदर्शन में इमरान का रुख कट्टर इस्लामिक बना, जो कि भारत के खिलाफ उनके नफरती बोलों में झलकता है, हालांकि अपने पश्चिमी मित्रों के समक्ष वह उदारवादी छवि प्रस्तुत करते हैं। इमरान खान की एक कुख्यात विशेषता यह भी है कि तुर्की और मलेशिया से संबंध बढ़ाने की एवज में पाकिस्तान के रिश्ते घनिष्ठ मित्र राष्ट्र यूएई और सऊदी अरब से खराब करवा डाले जबकि इस दौरान भारत के संबंध सऊदी अरब और यूएई समेत खाड़ी मुल्कों से प्रगाढ़ होते गए। पाकिस्तान का इतिहास अपने आय स्रोत से ज्यादा खर्च करने का रहा है, जिससे इतना भारी कर्ज चढ़ गया है कि चुकाना मुश्किल हो गया है। अब इमरान खान के पास विकल्प कम हैं– या तो अपने खर्चे घटाएं या फिर अतंर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसे ऋणदाताओं की अधिक कड़ी शर्तें स्वीकार करें। एक हालिया अध्ययन में, पाकिस्तानी सरकार की रिपोर्ट के मुताबिक पिछले तीन सालों में मुल्क पर चढ़ा कर्ज दुगुना होकर 85 बिलियन डॉलर हो गया है, जो बाहरी ऋण का नया रिकॉर्ड है। पड़ोसी श्रीलंका अब दूरंदेशी से काम लेते हुए पिछली गलतियां दोहराने से बच रहा है, जब उसे उधार चुकता न कर पाने की एवज में हम्बनतोता बंदरगाह चीन को सौंपना पड़ा था। लेकिन पाकिस्तान अपने श्सदाबहार दोस्तय चीन से प्राप्त कर्ज की दलदल में और गहरे धंसता प्रतीत हो रहा है, जिससे वह शायद ही कभी निकल पाए। पाकिस्तान ने बहुचर्चित चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा परियोजना हेतु बिना आगा–पीछा सोचे बहुत भारी ऋण चीन से उठाया है। चीन का एक उद्देश्य इस राजमार्ग के जरिए अफगानिस्तान के विशाल प्राकृतिक स्रोत अपने यहां पहुंचाना है। उधर चीन ने ग्वादर बंदरगाह कॉरिडोर का सारा नियंत्रण एक तरह से अपने हाथ में कर लिया है। चीनी मछलीमार नौकाएं अरब सागर के मत्स्य भंडार का दोहन करने को ग्वादर बंदरगाह पर धड़ल्ले से आ–जा रही हैं। राष्ट्रपति बाइडेन ने पदभार संभालने के बाद एक बार भी इमरान खान से बात नहीं की है। अमेरिका अफगानिस्तान में हुई अपनी बेइज्जती भूलेगा नहीं, जिसके पीछे वह पाकिस्तान को एक वजह मानता है। एक के बाद एक आए पाकिस्तानी प्रधानमंत्रियों ने माना है कि बेशक वे देश की विदेश और सुरक्षा नीति नए सांचे में ढालना चाहते थे, लेकिन इसके लिए सैन्य नेतृत्व से सीधी टक्कर लेना किसी भी राजनेता के लिए खतरनाक होता, विशेषकर राष्ट्रीय सुरक्षा और पड़ोसी भारत एवं अफगानिस्तान से रिश्तों को लेकर। पर इमरान खान ने वह राह चुनी है जो सेनाध्यक्ष जनरल कमर जावेद बाजवा को नागवार गुजरी है। यहां इमरान भूल रहे हैं कि जो मनमर्जियां वह लागू करवाना चाहते हैं और जिन्हें बाजवा का समर्थन न हो, ऐसा करके सेनाध्यक्ष की ताकत को कमकर आंकना मूर्खता और खतरनाक सिद्ध हो सकता है। सेनाध्यक्ष बाजवा और इमरान खान के बीच तनाव आईएसआई के पूर्व निदेशक और दिखावे के शौकीन एवं महत्वाकांक्षी ले. जनरल फैज हमीद के प्रति अधिक प्रेम दिखाने से बना है। बतौर आईएसआई मुखिया जनरल फैज ने वैश्विक मीडिया के ध्यान का केंद्र बनने के लालच में गंभीर चूक कर दी, जब अफगानिस्तान से अमेरिकी फौज भाग रही थी। वे अतंर्राष्ट्रीय मीडिया पर छाए, जब उन्होंने वरिष्ठ तालिबान नेताओं जैसे कि मुल्ला अब्दुल गनी बरादर को ऊंचे पद से महरूम करवाया, जिन्हें जान बचाकर काबुल से कंधार भागना पड़ा था। बेशक बाद में उनकी वापसी अपेक्षाकृत निचले ओहदे पर हुई। यह सारा खेल आईएसआई के खासमखास और तालिबान के ताकतवर गुट हक्कानी नेटवर्क की मदद से उन्होंने खेला था, जो पाकिस्तान और अफगान भूमि, दोनों जगह से अपनी गतिविधियां चलाता आया है। क्षुब्धा हुए सेनाध्यक्ष जनरल बाजवा ने फौरी प्रतिक्रियात्मक कार्रवाई में तत्कालीन आईएसआई मुखिया जनरल फैज का स्थानांतरण बतौर कमांडर पाक–अफगान सीमांत कोर में कर दिया, जिसका मुख्य काम ड्यूरंड सीमारेखा के आरपार सक्रिय तालिबान और अन्य पृथकतावादी गुटों जैसे कि राष्ट्रवादी पश्तूनों वाली तहरीक–ए–तालिबान (पाकिस्तान) से पैदा चुनौतियों से निपटना है। अब देखने में आ रहा है कि न तो अफगान तालिबान और न ही तहरीक–ए–तालिबान को अंतर्राष्ट्रीय सीमारेखा ड्यूरंड लाइन का जरा–सा सम्मान है। अफगान उप–विदेशमंत्री अब्बास स्तानिकजई ने 6 जनवरी को कहा ,श्ड्यूरंड रेखा केवल राजकीय मुद्दा न होकर पूरी कौम का है। यह पूरी तरह सरकार से संबंधित नहीं है। हम यह जिम्मेवारी राष्ट्र को सौंपेंगे ताकि मुल्क इस पर राष्ट्रीय फैसला ले।य इससे ड्यूरंड रेखा के दोनों ओर के पाकिस्तानी और पश्तून इलाकों में इस पर राजनीतिक सरगर्मी बढना तय है।

रैली निकालकर मतदान के लिए लोगों को किया जागरूक

देवरिया। रामपुर कारखाना विकास खंड तरकुलवा की ग्राम पंचायत कोंहवलिया स्थित पूर्व माध्यमिक विद्यालय में शिक्षकों एवं छात्रों ने रैली निकालकर लोगों को जागरूक किया गया। इस दौरान लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए लोगों को अधिक से अधिक मतदान करने के लिए प्रेरित किया गया। मतदाता जागरूकता रैली को रामपुर कारखाना के भाजपा के मंडल अध्यक्ष दीपक जायसवाल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह रैली कोनहवलिया चौराहा सहित गांव में घूम कर लोगों को स्लोगन बोलते हुए 3 मार्च को मतदान करने के लिए प्रेरित की। इस दौरान प्रधानाध्यापक अमरनाथ प्रसाद, संगीता प्रवीण, अरविंद कुमार, लीलावती देवी, ग्राम प्रधान मुन्ना निषाद, गंगा सागर यादव, सूरज बाल्मीकि, बूथ अध्यक्ष परमेश्वर पासवान, विकास सिंह आदि मौजूद रहे।

मेडिकल कालेज में एमबीबीएस प्रथम वर्ष की पढ़ाई शुरु

देवरिया। महर्षि देवरहा बाबा मेडिकल कालेज में एमबीबीएस प्रथम वर्ष में पढ़ाई शुरू हो गई है। लेक्चर थियेटर में छात्रों को पांच वर्ष कैसे पढ़ना है और क्या–क्या पढ़ना है इसके बारे में जानकारी दी गई। एमबीबीएस प्रथम वर्ष में शुरूआत में एक सप्ताह ओरिएंटेशन की पढ़ाई कराई जा रही है। एक सप्ताह बाद मूल विषय समय सारिणी के अनुसार पढ़ाए जाएंगे। छात्रों को बताया गया कि कैंपस में कैसे रहना चाहिए। एक डॉक्टर का कार्य और व्यवहार कैसा होना चाहिए। प्रथम वर्ष में एनाटामी, फजियोलाजी व बायोकेमेस्ट्री के बारे में पढ़ाया जाएगा। इसके लिए विभागों में छात्रों को घुमा कर दिखाया गया। इसके अलावा मेडिकल कालेज में घुमा कर सभी छात्रों को बताया गया कि यहां ओपीडी चलती है, यहां जांच आदि का कार्य होता है। डा. श्वेता सिंह ने कहा कि पढ़ाई के साथ ही आपका आचरण भी उत्तम होना चाहिए। कालेज में अनुशासन अति आवश्यक है। अनुशासन के साथ ठीक ढंग से पढ़ाई करें। कोई भी समस्या हो खुल कर बताएं उसका समाधान करने का पूरा प्रयास किया जाएगा। छात्रों ने कई सवाल किए जिसका समाधान चिकित्सा शिक्षकों ने किए। मेडिकल कालेज में 85 छात्रों ने प्रवेश लिया है। प्रवेश के लिए दूसरी काउंसिलिग भी शुरू हो गई है। इस दौरान प्रधानाचार्य डा. राजेश कुमार बरनवाल, एनाटामी के विभागाध्यक्ष डा. मृत्युंजय पांडेय, डा. संजय भट्ट, डा. अनीता रावत, डा. आरके सक्सेना, डा. प्रकाश श्रीवास्तव, डा. सुरुचि आदि मौजूद रहे।

21 छात्रों ने छोड़ी बीएड प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा

देवरिया। दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय से संबद्ध जिले के चार महाविद्यालयों में बीएड प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं शुरू हो गई। पहले दिन ही 21 छात्रों ने परीक्षा छोड़ दी। परीक्षा केंद्रों पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। दोपहर एक बजे से परीक्षा शुरू हुई। परीक्षा केंद्रों पर कोविड हेल्प डेस्क बनाया गया है। हेल्प डेस्क पर थर्मल स्क्रीनिग के बाद छात्रों को अंदर जाने की अनुमति दी गई। पहले दिन शिक्षा का मूलतत्व विषय की परीक्षा हुई। परीक्षा के प्रश्नों के उत्तर देने में छात्र परेशान नजर आए। बीआरडीबीपीजी कालेज में पंजीकृत 770 छात्रों में से चार छात्र अनुपस्थित रहे। इसी तरह संत विनोबा पीजी कालेज में 515 छात्रों की जगह 510 छात्रों ने ही परीक्षा दी। जबकि बाबा राघव दास पीजी कालेज आश्रम बरहज में 767 में से 759 छात्रों ने परीक्षा दी। इसी तरह मदन मोहन मालवीय पीजी कालेज भाटपाररानी में 554 में से चार छात्र अनुपस्थित रहे। जनपद में यह चार केंद्र बनाए गए हैं। आश्रम बरहज में दस, संत विनोबा पीजी कालेज में सात, मदन मोहन मालवीय पीजी कालेज में छह, बीआरडीबीपीजी कालेज में नौ विद्यालय का केंद्र बनाया गया है।

मतदान के दायित्वों से रूबरू हुए दिव्यांग मित्र

महराजगंज। दिव्यांग और बुजुर्ग मतदाताओं को मतदान कराने के लिए नियुक्त दिव्यांग मित्रों के प्रशिक्षण का आयोजन आईटीएम चेहरी में किया गया। इस दौरान दिव्यांग मित्र के रूप में नियुक्त एनसीसी और एनएसएस के विद्यार्थी मतदान के दायित्वों और उससे जुड़े कार्यों से रूबरू हुए। डीएम सत्येन्द्र कुमार ने कहा कि जनपद में पहली बार एनसीसी कैडेट्स और एनएसएस के वालंटियरों को दिव्यांग मित्र नामित किया गया है। इस बार जिला प्रशासन ने निर्णय लिया कि कोई भी दिव्यांग मतदाता या बुजुर्ग मतदान केंद्र तक आकर वोट करने से वंचित न रह जाएं और अगर आप लोग ठान लेंगे तो निश्चित रूप से हम सभी दिव्यांग साथियों से मतदान कराने में सक्षम होंगे। चुनाव के बाद सभी दिव्यांग मित्रों को प्रशस्ति पत्र देकर उनके इस अमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा। डीएम ने प्रत्येक बूथ पर व्हील चेयर की व्यवस्था की गई है। मुख्य विकास अधिकारी गौरव सिंह सोगरवाल ने कहा कि आप लोगों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। कोई भी दिव्यांग या बुजुर्ग मतदाता शारीरिक अक्षमता या उम्र के कारण मतदान केंद्र तक आकर वोट करने से वंचित न रहने पाए। आप लोगों को ऐसे लोगों की सहायता कर उन्हें मतदान केंद्र तक लाना है। प्रशिक्षक पीडी डीआरडीए, राज करन पाल और एआर कोआपरेटिव सर्वेंद्र सिंह ने दिव्यांग मित्रों को मतदान पूर्व और मतदान के दौरान उनकी भूमिका व कार्यों के साथ कोविड प्रोटोकाल के विषय में जानकारी दी गई। इस दौरान इनके टीकाकरण की भी व्यवस्था की गई है।

वर्ष भर से अधूरा है सड़क निर्माण, राह चलना दुश्वार

महराजगंज। नौतनवा विकास खंड के गनवरिया गांव से आराजी घाट होते हुए करमहिया से बरगदही गांव को जोड़ने वाले संपर्क मार्ग अधर में लटका हुआ है। करीब एक वर्ष पहले सड़क निर्माण के क्रम बरगदही गांव से करमहिया तक गिट्टी गिरवा दिया गया, लेकिन कुछ माह बाद ही सड़क निर्माण रोक दिया गया। सड़क अब भी आधी–अधूरी है। बिखरी गिट्टियां राहगीरों के लिए मुसीबत बन रही हैं। गिट्टी युक्त मार्ग पर पैदल, बाइक व साइकिल सवार आए दिन गिर कर चोटिल हो रहे हैं। ग्रामीणों ने दर्जनों बार सड़क निर्माण पूर्ण कराने की मांग की, लेकिन नतीजा जस का तस है, सड़क निर्माण अधूरा है। वर्ष भर से ग्रामीण सांसत में हैं। सड़क पर बिखरी गिट्टियों से दर्जनों लोग गिर कर चोटिल हो चुके हैं, जिससे आने–जाने में लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। गोपी चंद सड़क जब बन रही थी, तो लगा था कि शीघ्र ही इस रोड से सफर आसान हो जाएगा, लेकिन माह भर बीतने को है, जब तक सड़क का निर्माण पूर्ण नहीं हो सका है। जिम्मेदारों को इस पर ध्यान देना चाहिए। सुग्रीव यादव ठीकेदार को सड़क निर्माण पूर्ण करने के निर्देश दिए गए हैं। शीघ्र ही निर्माण कार्य शुरू करा दिया जाएगा।

ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने निरीक्षण कर दिए निर्देश

महराजगंज। विधानसभा चुनाव को लेकर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट साईं तेजा सीलम के नेतृत्व में निकली टीम ने पार्टी कार्यालयों व पोलिंग बूथों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पोलिंग बूथ के आसपास साफ सफाई रखने का निर्देश दिया। ज्वाइंट मजिस्ट्रेट साई तेजा सीलम की टीम ने पनियरा विधानसभा में पार्टियों द्वारा बनाए गए अस्थाई कार्यालयों का निरीक्षण कर उनकी वैधता भी जांची। नगर पंचायत परतावल के प्राथमिक विद्यालय छातीराम पोलिंग बूथ का निरीक्षण कर संतुष्ट दिखे। उन्होंने इस विद्यालय को माडल बूथ बनाने का निर्देश अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत परतावल देवेंद्र मणि त्रिपाठी व अवर अभियंता ध्रुव नारायन को दिया। अपर एसडीएम मदन मोहन मौर्या, तहसीलदार राजेश कुमार श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

रोजगार व शिक्षा को और करें बेहतर, देश का होगा विकास

देवरिया। चुनावी बयार बह रही है, हर कोई अपने वायदों की फेहरिस्त के साथ जनता के बीच पहुंच रहा है। घर–घर दस्तक देने के साथ ही उपलब्धियों की बखान कर रहा है। इन सभी के बीच अब जनता भी चुनावी मूड में आने लगी है। पिछले पांच साल में कानून व्यवस्था बेहतर हुई है। विकास भी खूब कराया गया है, लेकिन भावी सरकार ऐसी हो, जो भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करने के साथ ही शिक्षा व्यवस्था और बेहतर किया जाए। शिक्षा और रोजगार को बढ़ाने तथा सुलभ बनाने की जरुरत है। भटनी के बहादुर यादव पीजी कालेज में चुनावी चौपाल में छात्रों ने इसी तरह के अपने विचार प्रस्तुत किए। कालेज के छात्र–छात्राएं दोपहर को क्लास से छूटने के बाद चुनावी माहौल में चर्चा करते हुए नजर आए। पहुंची तो छात्र पूरी तरह से चुनावी माहौल में आ गए। बीएड द्वितीय वर्ष के छात्र व सलेमपुर के रहने वाले अंकुर गुप्ता बोल पड़े, भइया हम तो उसी पार्टी को मतदान करेंगे, जो नौकरियों पर ध्यान देगी। सरकार बनने के बाद युवाओं को रोजगार देने के नाम पर छलावा किया जाता है। रोजगार की ठीक से व्यवस्था होनी चाहिए। बीच में बात काटते हुए ऋतिका रौनियार बोल पड़ी, सरकार में महिलाओं की सुरक्षा भावना बढ़ी है, लेकिन अभी बहुत प्रयास करने की जरूरत है। छात्राओं के लिए स्कूल–कालेजों में ऐसे कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए, जिससे वह आत्मरक्षा का गुर सीख सकें। महिलाओं की रक्षा जरूरी है। प्रीति रौनियार ने आफलाइन शिक्षा की वकालत की। उन्होंने कहा कि आनलाइन कक्षाएं संचालित होने से छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। चुनाव के लिए कोरोना नहीं है, केवल छात्रों की पढ़ाई प्रभावित की जा रही है। स्वेता कश्यप ने कहा कि यूपी में शिक्षा के क्षेत्र में ज्यादा काम नहीं हो रहा है। बिना पढ़े और बिना परीक्षा दिए ही प्रमोट कर छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ किया जा रहा है। बड़े छात्रों की पढ़ाई तो कुछ ठीक है। लेकिन प्राइमरी स्तर के बच्चों की आनलाइन पढ़ाई गलत है। अमृतांश कुमार तिवारी ने कहा कि क्षेत्र में नोएडा, दिल्ली, बंगलुरु जैसे शहरों की तरह पढ़ाई की व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे युवाओं को दूसरे शहरों का मुंह पढ़ाई के लिए न देखना पड़े। आलोक प्रताप यादव ने भी इनकी बातों का समर्थन करते हैं। अनुराधा ने कहा कि निजीकरण पर पूरी तरह से रोक लगनी चाहिए। सरकारी व्यवस्थाओं के निजीकरण होने से मंहगाई बढ़ रही है। युवाओं के रोजगार के लिए यूपी में बेहतर इंतजाम होने चाहिए। ताकि पढ़े लिखे युवाओं का पलायन रोका जा सके। इसी तरह की बातें सावित्री, रंजना, मनोज, राघव, दुर्गेश कुमार भी कहते हैं।

सुमंगल फैमिली शाप के मालिक समेत पांच पर मुकदमा दर्ज

देवरिया। शहर के अंसारी रोड स्थित सुमंगल फैमिली शाप के मालिक समेत पांच के विरुद्ध गर्भपात कराने, हत्या की साजिश रचने व जानमाल की धमकी देने का मुकदमा दर्ज हुआ है। सदर कोतवाली पुलिस ने विवेचना शुरू कर दी है। इस कार्रवाई से खलबली मची है। शहर के एक मोहल्ले की रहने वाली महिला की पहली शादी 2014 में हुई थी। शादी के छह माह के भीतर ही उनके पति की लुटेरों ने हत्या कर दी। विधवा महिला मानसिक रूप से टूट गई थी। कपड़ा व्यवसायी सतीश बरनवाल के पुत्र अमन बरनवाल ने महिला को अपने प्रेमजाल में फंसा लिया। शादी का झांसा देकर अपने घर बुलाकर गलत संबंध बनाता रहा। स्वजन के सहयोग से उसने महिला का चार बार गर्भपात कराया। महिला के गैर बिरादरी की होने के कारण घरवालों की सलाह पर युवक ने 14 जनवरी को दिल्ली में आर्य समाज मंदिर में शादी रचाई। आरोप है कि नोएडा में रहने वाली अपनी बहन स्वाति व बहनोई निशांत और माता–पिता के साथ मिलकर महिला की हत्या कर शव को ठिकाने लगाने व दूसरी शादी करने की योजना बनाने लगे। अमन के पिता ने एक युवक को दिल्ली भेजा। इसकी जानकारी होने पर महिला ने अपने रिश्तेदारों को बताया। इसी बीच अमन आठ फरवरी को रुपये, जेवरात, मोबाइल आदि लेकर फरार हो गया। महिला जब देवरिया आई और अमन के माता–पिता से मिली तो उन लोगों ने गाली देते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए भगा दिया। पुलिस ने अमन, उसके पिता सतीश, माता सुमन, बहन स्वाति व बहनोई निशांत के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया है। कपड़ा व्यवसायी समेत पांच के विरुद्ध गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। विवेचना की जा रही है। जल्द ही आरोपितों को गिरफ्तार किया जाएगा।

प्रेक्षक ने बूथों का लिया जायजा, दिए निर्देश

महराजगंज। विधानसभा चुनाव को शांतिपूर्वक कराने के लिए प्रेक्षक केआरबीएन चक्रवर्ती ने बूथों को निरीक्षण कर व्यवस्था परखी और आवश्यक निर्देश दिए। साथ ही लोगों को मतदान के प्रति जागरूक भी किया। प्रेक्षक ने रजौडा कला, रजौडा खुर्द, रजौडा पंजुम, बेलटिकरा, बैजूडेहरा, इलाहाबाद, बडवार, नेवासपोखर में बूथों व सुभागी देवी इंटर कालेज इलाहाबाद में चुनाव के लिए बाहर से आने वाली फोर्स के ठहरने आदि की व्यवस्था देखी। क्षेत्र में मुजुरी में तैनात स्टेटिक व फ्लाइंग स्क्वाड टीम का भी जायजा लिया। उन्होंने कितने वाहन टीम द्वारा चेक किया गया। उसका रजिस्टर बनाकर दर्ज करने का निर्देश दिया। उन्होंने कृष्णा महिला महाविद्यालय बड़वार में छात्राओं को मतदान के लिए जागरूक किया। कहा कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए मतदान करना आवश्यक है। इसलिए तीन मार्च को हर मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करें और अपने घर वालों और आस–पास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करें। नायब तहसीलदार देश दीपक त्रिपाठी, प्रभारी निरीक्षक रामाज्ञा सिंह, दिनेश गौड़ आदि मौजूद रहे।

महिला ने एसपी से लगाई न्याय की गुहार

महराजगंज। थाना क्षेत्र के नगर पालिका निवासी महिला ने एक युवक पर छेड़छाड़, गाली गलौज, जान से मारने की धमकी व जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करने का आरोप लगाते हुए एसपी प्रदीप गुप्ता ने जनसुनवाई पोर्टल के माध्यम से शिकायत की है। पीड़िता ने शिकायती पत्र में बताया कि रात एक युवक घर में घुसकर आपत्तिजनक हरकत करने लगा, चीख पुकार सुनकर बेटी जग गई, जिससे चाकू से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गया, जबकि बीते दो फरवरी को दैनिक मजदूरी कर घर लौट रही थी। उसी आरोपित ने सुनसान रास्ते में पकड़ लिया, पुलिस को फोन लगाने का प्रयास कर रही थी कि मोबाइल तोड़ दिया गया। किसी तरह भागकर इज्जत बचाई। थाना में शिकायत की, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई, जिससे पीड़िता काफी डरी सहमी हुई है। उसने एसपी से न्याय की गुहार लगाई है। इंस्पेक्टर राजेश कुमार पांडेय ने बताया कि मामले की जांच पड़ताल चल रही है, उचित कार्यवाही की जाएगी।

जिले में पहुंची केंद्रीय टीम, शुरू हुआ स्वच्छता का सत्यापन

महराजगंज। स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 में चयनित जिले के सात नगर निकायों में केंद्रीय टीम भौतिक सत्यापन करेगी। इसके लिए आठ सदस्यीय टीम जिले में पहुंच गई। टीम ने पहले ही दिन नगर पालिका परिषद महराजगंज में शौचालय सहित अन्य स्वच्छता संबंधी मानकों का भौतिक सत्यापन शुरू कर दी। नगर पालिका परिषद महराजगंज, नौतनवा और सिसवा के अलावा नगर पंचायत घुघली, निचलौल, फरेंदा और सोनौली स्वच्छ सर्वेक्षण–2022 में चयनित है। इन निकायों ने स्वच्छ सर्वेक्षण में भाग लेने के लिए निकायों में स्वच्छता संबंधी अभिलेख उपलब्ध कराया है। केंद्रीय टीम इन निकायों में अभिलेख के आधार पर भौतिक सत्यापन करेगी। आठ सदस्यीय टीम जिले में पहुंची है। नगर पालिका परिषद महराजगंज में डोर–टू–डोर पहुंचकर व्यक्तिगत शौचालय का भौतिक सत्यापन शुरु कर दी है। इसके अलावा शहर में निर्मित सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालय, वार्डों और मुख्य सड़क के किनारे लगे डस्टबिन, घर–घर पहुंचकर कूड़ा उठाने की व्यवस्था और कूड़ा वाहनों की जांच कर रही है। स्वच्छता मानक को पूरा करने पर टीम के रिपोर्ट पर शहर को ग्रेडिंग मिलेगी। ग्रेडिंग के हिसाब से शासन निकाय को विकास कार्य के लिए धन आवंटित करेगा। नगर पालिका के ईओ आलोक कुमार सिंह का कहना है कि टीम का भौतिक सत्यापन गोपनीय है। टीम किस वार्ड में कहा जांच कर रही है, इसे बताना मुश्किल है। यहां के बाद दूसरे निकाय की भौतिक सत्यापन करेगी।

वाहन की चपेट में आने से महिला की मृत्यु

महराजगंज। श्यामदेउरवा थाना क्षेत्र के बसहिया खुर्द गांव के बाहर सड़क पार कर रही सुनीता गंभीर रूप से घायल हो गई। स्थानीय लोगों के सहयोग से उन्हें परतावल सीएचसी पर पहुंचाया गया। वहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सक ने मेडिकल कालेज रेफर कर दिया। मेडिकल कालेज ले जाते समय रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई। स्वजन ने सुबह अंतिम संस्कार कर दिया। इंस्पेक्टर आनंद गुप्ता ने बताया कि तहरीर मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

एटीएम कार्ड बदलकर शातिर ने निकाले 16 हजार रुपये

महराजगंज। बृजमनगंज थाना क्षेत्र के धानी बाजार स्थित वन इंडिया एटीएम मशीन से पैसा निकालने आई एक महिला का एटीएम कार्ड बदल कर जाल साज ने 16 हजार रुपये निकाल लिए। जब महिला के मोबाइल में पैसा निकलने का मैसेज मिला तब उसे पता चला। पुरन्दरपुर थाना क्षेत्र निवासी महिला मैना अपने मायके कानापार आई थी। पैसा निकालने के लिए अपना एटीएम कार्ड लाइन में खड़े एक युवक को दिया। युवक ने मैना को कुछ देर बाद उनका कार्ड वापस देते हुए कहा कि अभी पैसा नहीं निकल रहा है, थोड़ी देर बाद आना। उसके बाद युवक वहां से गायब हो गया। आरोपित ने मैना देवी के खाते से दो बार में कुल 16 हजार की निकासी दूसरे जगह से कर लिया है। चौकी प्रभारी धानी मंगल सिंह ने कहा कि घटना की तहरीर मिली है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल में लगी है।

छत्तीसगढ़ के विधायक ने कांग्रेस प्रत्याशी के साथ किया जनसंपर्क

गोसाईगंज–अयोध्या। गोसाईगंज कस्बे में कांग्रेस पार्टी की प्रत्याशी शारदा देवी जायसवाल ने छत्तीसगढ़ के विधायक व संसदीय सचिव इंद्रशाह मांडवी के साथ जबरदस्त डोर टू डोर जनसंपर्क किया। जनसंपर्क के दौरान पार्टी प्रत्याशी के समर्थन में भारी भीड़ मौजूद रही। इस दौरान शारदा देवी जायसवाल ने लोगों को लोगो को कांग्रेस पार्टी की विचारधारा को बताते हुए अधिक से अधिक वोट देने की अपील किया।एक संक्षिप्त मुलाकात में पार्टी प्रत्याशी शारदा देवी जायसवाल और उनके पति वरिष्ठ कांग्रेसी नेता ईश्वरदास जायसवाल ने कहाकि गोसाईगंज की जनता विगत कई चुनाव में सपा बसपा व भाजपा को वोट दे चुकी है। मौजूदा भाजपा शासन में जिस तरह की महंगाई, आवारा जानवर,व बेरोजगारी का माहौल है उसके जनता तंग आ चुकी है और कांग्रेस की तरफ उम्मीद भरी नजरों से देख रही है। हमारी पार्टी आने वाले समय में किसानों का पूरा कर्जा माफ, 25 सौ रुपये कुंटल में गेहूं धान, 400रुपये कुंतल गन्ना, बिजली बिल हाफ, कोरोनाकाल का बिजली के बिल का बकाया माफ किया जाएगा, कोरोनाकाल मे आर्थिक मार से पीड़ित परिवार को 25000 की आर्थिक मदद,सरकारी रोजगार, संविदा कर्मियों और ठेका कर्मियों का नियमितीकरण,10 लाख तक के इलाज का खर्चा मुफ्त,छात्राओं को स्मार्टफोन और स्कूटी, साल में तीन गैस सिलेंडर मुफ्त, महिलाओं के लिए फ्री बस यात्रा, 1000 रुपये महीने वृद्धावस्थाविधवा पेंशन के साथ के साथ प्रदेश में वीरांगनाओं के नाम पर 75 दक्षता विद्यालय खोलने का काम करेगी। हम लोगों के अपील करते हैं अधिक से अधिक मत देकर कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी को विजई बनाएं। उक्त अवसर पर कांग्रेस नगर अध्यक्ष अहमद कुरैशी,मनोज जायसवाल,अजीत वर्मा,दयाशंकर तिवारी,शकील रहमानी,रामकेवल वर्मा,मुल्ला राइन,ह्रदय नारायण मिश्रा सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

अनियंत्रित होकर घर में घुसी पिकअप

महराजगंज। बरगदवा गांव के नौतनवा–ठूठीबारी मार्ग पर तेज रफ्तार से आ रही पिकअप अनियंत्रित होकर घर में घुस गई। रफ्तार से आ रही पिकअप अनियंत्रित होकर गांव निवासी इस्तियाक खान के घर में घुस गई। बगल के अंकित हार्डवेयर की दुकान के बाहर रखे हुए सीमेंट शेड को भी क्षतिग्रस्त कर दिया। थानाध्यक्ष बरगदवा अजित कुमार ने बताया कि वाहन पलटने की सूचना मिली है। तहरीर मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

कोरोना से किशोर की मृत्यु, 25 मिले संक्रमित

महराजगंज। जिले में कोरोना से एक किशोर की मौत हो गई। जबकि 25 कोरोना संक्रमित पाए गए हैं और 55 रोगियों के ठीक होने की रिपोर्ट आई है। महराजगंज जिले के रामपुर बुजुर्ग निवासी प्रमोद का पुत्र तनिष्क एक सप्ताह पूर्व कोरोना संक्रमित पाया गया था, जिसका मेडिकल कालेज में इलाज चल रहा था। उसकी मृत्यु हो गई। नोडल अधिकारी डा. आइए अंसारी ने बताया कि जिले में कुल कोरोना संक्रमितों की संख्या 14724 हो गई है। इसमें 14469 रोगियों ने कोरोना से जंग जीत ली है। अब तक 146 की मृत्यु हो चुकी है। वर्तमान में सक्रिय रोगियों की संख्या 109 हो गई है। कहा कि कोरोना का प्रभाव भले ही कम हो रहा है, लेकिन अभी भी लोगों को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

7371 को लगा टीका, 2592 की हुई जांच

महराजगंज। जिले में कोरोना से बचाव का टीका और जांच कराने को लेकर लोगों का उत्साह चरम पर रहा। इस दौरान 7371 किशोर, युवक, महिलाओं और पुरुषों को टीका लगाया गया और 2591 लोगों की जांच की गई। जिला महिला अस्पताल, सहित सभी सीएचसी सहित 40 स्थानों पर कोरोनारोधी टीका लगाने और जांच के लिए शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान लगभग सभी केंद्रों पर लोगों की कतार लगी रही। नोडल अधिकारी डा. आइए अंसारी ने बताया कि बृजमनगंज 149, धानी 14, घुघली 202, लक्ष्मीपुर 114, महराजगंज 104, मिठौरा 150, नौतनवा 588, निचलौल 328, पनियरा 210, परतावल 206, फरेंदा 188, सिसवा 135 तथा महिला अस्पताल में 203 लोगों की जांच की गई है। एंटीजन से 1441 लोगों की जांच की गई है, जबकि आरटीपीसीआर जांच के लिए 1150 लोगों का नमूना भेजा गया है।

सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की जनसभा 20 को

अयोध्या। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव 20 फरवरी को रुदौली कस्बे में 11:00 बजे रुदौली विधानसभा व बीकापुर विधानसभा की संयुक्त चुनावी रैली को संबोधित करेंगे। सपा जिलाध्यक्ष गंगा सिंह यादव ने बताया कि विधानसभा चुनाव को देखते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव रुदौली कस्बे में ऐतिहासिक जनसभा को संबोधित करेंगे। श्री यादव ने बताया कि बीकापुर विधानसभा के प्रत्याशी फिरोज खान गब्बर व रुदौली विधानसभा प्रत्याशी आनन्दसेन यादव संयुक्त चुनावी सभा को संबोधित करेंगे श्री यादव ने बताया कि अयोध्या जनपद 5 सीटों पर समाजवादी पार्टी जीतेगी सदस्य विधान परिषद हीरालाल यादव ने बताया कि सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की चुनावी सभा को ऐतिहासिक बनाने के लिए दोनों विधानसभा में पार्टी के कार्यकर्ता और नेता लगातार जनता से संपर्क कर रहे हैं सभी में उत्साह का माहौल है जिससे लगता है विधानसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत होगी इस अवसर पर मुख्य रूप से जिला उपाध्यक्ष मनोज जयसवाल सपा जिला प्रवक्ता चौधरी बलराम यादव जिला सचिव वसी हैदर गुड्डू वरिष्ठ नेता शैलेंद्र यादव पूर्व सभासद राम भजन यादव बृजेश यादव आदि लोग सभा स्थल का निरीक्षण किया।

सोना व नेपाली मुद्रा के साथ मुंबई का युवक गिरफ्तार

महराजगंज। भारत–नेपाल सीमा पर तैनात एसएसबी, पुलिस व सीमा शुल्क की संयुक्त टीम ने देर रात महाराष्ट्र निवासी एक आरोपित के पास से 488.75 ग्राम सोना और विदेशी मुद्रा बरामद करते हुए गिरफ्तार कर लिया है। आरोपित को सुरक्षाकर्मियों ने अग्रिम कार्रवाई के लिए कस्टम को सौंप दिया है। पूछताछ में आरोपित ने अपना नाम, पता मनोज जयंती निवासी, रूम नंबर तीन फर्स्ट फ्लोर सुरुची, शिवाजी चौक मलाड, पूर्वी मुंबई, महाराष्ट्र बताया। सोनौली कोतवाली प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार सिंह ने बताया कि बरामद सामान व आरोपित को नौतनवा कस्टम को अग्रिम कार्रवाई के लिए सौंप दिया गया।

उतरौला विधानसभा में कांग्रेस पार्टी का निर्णायक मोड़ की ओर

हजारों की संख्या में लोगों ने की सदस्यता ग्रहण

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। प्रदेश में चल रहे विधानसभा चुनाव को देखते हुए उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने विधानसभा स्तर पर कोऑर्डिनेटरो की नियुक्ति की है जिसके कड़ी में 293 उतरौला विधानसभा का कोऑर्डिनेटर पार्टी के जिला प्रवक्ता और 1987 88 में एम एल के पी जी कॉलेज में छात्रसंघ अध्यक्ष रहे घनश्याम मिश्र को पार्टी प्रत्याशी धीरेंद्र प्रताप सिंह को जिताने की जिम्मेदारी सौप कर भरोसा जताया है इस अवसर पर मिश्र ने स्थानीय पत्रकारों से बातचीत कर बताया कि पार्टी ने उतरौला क्षेत्र की जनता को एक नायाब हीरा दिया है यह रखना है या गिरा देना है इसका फैसला आपको ही करना धीरेंद्र प्रताप सिंह धीरू भाई ने कभी कहा नहीं करके दिखाया है उक्त अवसर पर श्री मिश्र ने कहा कि यह वक्त हमारी परीक्षा की घड़ी है हमें अपने छोटे मोटे मतभेद छोड़कर कांग्रेस पार्टी और उसके प्रत्याशियों को जिताना है नहीं तो हमारी संस्कृति एकता अखंडता के साथ देश एक बार फिर गुलामी की ओर जा चुका है अब हमें एक बार पुनः देश में लोकतंत्र की बहाली हेतु संघर्ष करना है देश बिक चुका है नौकरियां समाप्त हो चुकी हैं पूरे तंत्र पर अडानी का कब्जा हो चुका है किसानों मजदूरों युवाओं को इस लड़ाई में एक बार पुनः कूदने की आवश्यकता है किसानों की हत्यारी सरकार से अब और कोई उम्मीद मत करो एक दो हजार देकर आपकी हजारों रुपयों को दूसरी तरफ से खाद में उसका वजन 5 किलो कम करके डीजल पेट्रोल को 50 की जगह 100 करके गैस का दाम 400 से 980 रुपये खाद्यान्न की वस्तु तेल मसालों के दामों में वृद्धि करके इन्होंने आपके हाथ से सब कुछ छीन लिया है सड़क हवाई जहाज कोयला दूरसंचार मोबाइल की सारी एजेंसी बड़े उद्योग देश में कोई भी ऐसी चीज नहीं है जिसमें अडानी का कब्जा नहीं है अब देश के हर अहम और बुनियादी मामले का फैसला अडानी समूह कर रहा है इसलिए देश और प्रदेश को बचाने के लिए अब कांग्रेश के साथ आइए अन्यथा यह देश आपके हाथ से जा रहा है आने वाली संताने आपके किए पर पछताएंगी और शर्मिंदा होगी इसलिए पार्टी महासचिव एवं प्रदेश प्रभारी प्रियंका जी ने महिलाओं को 40 परसेंट विधानसभा चुनाव में भागीदारी के साथ साल तीन गैस सिलेंडर फ्री देने किसानों का कर्ज माफ करने बिजली बिल हाफ करने छात्राओं को आगे बढ़ने हेतु स्मार्टफोन स्कूटी देने वृद्धा पेंशन 1 हजार आंगनबाड़ी और आशा बहुओं को 10 हजार मानदेय प्रतिमाह देने के साथ महिलाओं बसों में यात्रा निशुल्क गन्ने का मूल्य 400 रुपए करने के साथ गेहूं धान की सरकारी खरीद 25 सौ रुपए प्रति कुंतल व 10 लाख तक का इलाज सभी लोगों का रे करने के साथ ही संविदा कर्मियों के साथ ही 20 लाख लोगों को सरकारी रोजगार देने की बात कही कांग्रेश पार्टी ने जब जो भी कहा उसे पूरा किया है इसमें कोई संशय नहीं है इसलिए आज अपने मताधिकार का सही उपयोग कर अपन जुझारू देश को और अपने आप को बचाने का काम कीजिए अन्यथा योगी और मोदी अब अपना दंड कमंडल लेकर निकलने के फिराक में हैं जहां तक उतरौला के वर्तमान कांग्रेसी प्रत्याशी धीरेंद्र प्रताप सिंह धीरू की बात है राजनीति ज्यादा नहीं करते हमेशा काम किया है इनका कार्यकाल काम से बोलता है सैकड़ों सफाई कर्मी आशा बहुएं रोजगार सेवक छोटे–छोटे सैकड़ों ठेकेदार इनके प्रयासों से अपनी जीविका चला रहे हैं यह बताने की जरूरत नहीं है साथ ही ये गंगा जमुनी तहजीब के वाहक हैं इनके आने से आपको सुरक्षा और मजबूती मिलेगी उक्त अवसर पर ईट भट्टा मजदूरों के नेता बृजेश चौहान जहांगीर खान कमजोर दलित मजलूमों का आवाज उठाने वाले बजरंगी अकेला सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

वी.वी.पैट का द्वितीय रैडमाइजेशन सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। बैलेट यूनिट,

कन्ट्रोल यूनिट तथा वी.वी.पैट का द्वितीय रैडमाइजेशन भारत निर्वाचन आयोग द्वारा 302–शोहरतगढ़ अनुप्रेरणा सिंह, 303–कपिलवस्तु (अ0ज0) कमलकान्त सरोच, 304–बांसी अशोक ए0 शिंगारे, 305–इटवा के लिए संजय दूबे, 306–डुमरियागंज भीष्म कुमार, व्यय प्रेक्षक डी0एस0मीना, गौरव कुमार जैन, पुलिस प्रेक्षक धीना करन, जिला निर्वाचन अधिकारीध जिला मजिस्ट्रेट दीपक मीणा, मुख्य विकास अधिकारीध्प्रभारी अधिकारी मतदान कार्मिक पुलकित गर्ग एवं प्रत्याशियों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में विकास भवन सभागार में सम्पन्न हुआ। 302–शोहरतगढ़ में 464 बैलेट यूनिट, कन्ट्रोल यूनिट तथा वी.वी.पैट, 303–कपिलवस्तु 583 बैलेट यूनिट, कन्ट्रोल यूनिट तथा वी.वी.पैट, 304–बांसी 497 बैलेट यूनिट, कन्ट्रोल यूनिट तथा वी.वी.पैट, 305–इटवा 426 बैलेट यूनिट, कन्ट्रोल यूनिट तथा वी.वी.पैट तथा 306–डुमरियागंज 488 बैलेट यूनिट, कन्ट्रोल यूनिट तथा वी.वी.पैट कुल 2457 बैलेट यूनिट, कन्ट्रोल यूनिट तथा वी.वी.पैट का द्वितीय रैण्डमाइजेशन किया गया। इसके अलावा 302–शोहरतगढ़ में 93 बैलेट यूनिट 93 कन्ट्रोल यूनिट तथा 186 वी.वी.पैट, 303–कपिलवस्तु 117 बैलेट यूनिट, 117 कन्ट्रोल यूनिट तथा 234 वी.वी.पैट, 304–बांसी 100 बैलेट यूनिट, 100 कन्ट्रोल यूनिट तथा 199 वी.वी.पैट, 305–इटवा 86 बैलेट यूनिट, 86 कन्ट्रोल यूनिट तथा 171 वी.वी.पैट तथा 306–डुमरियागंज 98 बैलेट यूनिट, 98 कन्ट्रोल यूनिट तथा 196 वी.वी.पैट को रिजर्व में रखा गया है। समस्त प्रत्याशी, प्रतिनिधियों को बूथवार मशीनो तथा रिजर्व मशीनो की सूची उपलब्ध कराया गया। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारीध्अपर जिलाधिकारी (वि0ध्रा0) उमाशंकर, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी नसीम अहमद, अधिशासी अभियन्ता सिंचाई निर्माण खण्ड ए0के0सिंह तथा अन्य संबधित उपस्थित थे।

निष्पक्ष, स्वतन्त्र एवं भयमुक्त वातावरण में सम्पन्न होगा चुनावः दीपक मीणा

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर 19 फरवरी 2022ध भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2022 को सकुशल, निष्पक्ष, स्वतन्त्र एवं भयमुक्त वातावरण में सम्पन्न कराये जाने के लिए शनिवार को लोहिया कलाभवन में

302–शोहरतगढ़ अनुप्रेरणा सिंह, 303–कपिलवस्तु (अ0ज0) कमलकान्त सरोच, 304–बांसी अशोक ए0 शिंगारे, 305–इटवा के लिए संजय दूबे, 306–डुमरियागंज भीष्म कुमार तथा जिला निर्वाचन अधिकारीधजिला मजिस्ट्रेट दीपक मीणा, मुख्य विकास अधिकारीध प्रभारी अधिकारी मतदान कार्मिक पुलकित गर्ग की उपस्थिति में जोनल मजिस्ट्रेट, सेक्टर मजिस्ट्रेट, तथा बूथवार लगाये प्रेक्षक का प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण के दौरान प्रोजेक्टर के माध्यम से जानकारी दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान ई.वी.एम. तथा वी.वी.पैट को सेट करने और मॉकपोल प्रक्रिया, मशीन की सीलिंग, स्पेशल टैंग तथा एड्रेस टैग लगाना, व निर्वाचन संबधी विभिन्न प्रोफार्मा के बारे में जानकारी दी गयी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने मास्टर ट्रेनरो को निर्देश दिया कि आप लोग सही ढंग से प्रशिक्षण प्राप्त कर ले यदि किसी भी प्रकार की समस्या हो तो उसे अभी सही ढंग से जानकारी प्राप्त कर ले। मुख्य विकास अधिकारीध्प्रभारी अधिकारी मतदान कार्मिक पुलकित गर्ग ने प्रेक्षकगण को जानकारी देते हुए बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी की गयी वीडिया क्लिप दिखाया गया तथा भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार प्रशिक्षण दिया गया।

प्रेक्षकगण ने निर्देश दिया कि संवेदनशील तथा अतिसंवेदनशील बूथो पर तैनात किया जाये। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान डी0सी0एन0आर0एल0एम0 योगेन्द्र लाल भारती, डी0सी0मनरेगा संजय शर्मा, अधिशासी अभियन्ता सिंचाई निर्माण खण्ड आर0के0सिंह तथा अन्य संबधित उपस्थित थे।

जनसभा कर जनता को बताई पार्टी की नीतियां, मांगा समर्थन

अनंत मिश्रा/दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका/सिद्धार्थनगर। क्षेत्र के सुकरौली गांव में शनिवार को भाजपा प्रत्याशी श्यामधनी राही के समर्थन में विशाल जनसभा हुई। इस अवसर पर भाजपा के पदाधिकारियों ने पार्टी की नीतियों दे अवगत कराते हुए जनता से अपने पक्ष में समर्थन मांगा है। भाजपा, सांसद देवरिया रमापति राम त्रिपाठी ने जनसभा को संबोधित किया। पार्टी की नीतियों को विस्तार से बताया और भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में मतदान की अपील किया है। इस दौरान सांसद जगदम्बिका पाल, अखिलेश त्रिपाठी, सुरेंद्र पांडे, जगदीश जयसवाल सच्चिदानंद चतुर्वेदी हेमंत जयसवाल, शिवशरण चौरसिया, नितेश पाण्डेय, महेंद्र लोधी, आशीष शुक्ल, अर्चिस्मान मिश्रा, जितेंद्र कुमार, फूलचंद जायसवाल, सरोज शुक्ल, अरुणिमा मिश्रा, राजाराम लोधी, बिहारी पासवान, चन्द्र शेखर पासवान, चंद्र प्रकाश लाल श्रीवास्तव, ब्रम्हचारी दुबे, विवेक गोस्वामी, मंगलेश ,चीनक, सत्यकुमार, बेचन साहनी, दुर्गेश राय, हरिराम शुक्ल आदि मौजूद रहे।

बीडीओ जोगिया ने जाना मतदान केंद्रों का हाल,दिया निर्देश

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। बीडीओ जोगिया मनोज कुमार ने शनिवार को मतदान केंद्र लखनापार व हरैया का निरीक्षण किया। केंद्र में मौजूद सुविधाओं की जांच की। कमियों को तत्काल दूर करने के लिए निर्देशित किया। प्राथमिक विद्यालय हरैया में लगे हैंडपंप से दूषित पानी निकलता देख ग्राम प्रधान अब्दुल कयूम से इसे रिबोर कराने के लिए कहा। प्राथमिक विद्यालय लखनापार में पास में बने सामुदायिक शौचालय में ताला लगा देख ग्रामीणों से जानकारी ली। लोगों ने बताया कि करीब एक वर्ष पूर्व बने इस सामुदायिक शौचालय का ताला नहीं खुला है।

सामान्य प्रेक्षक सुनेंगे प्रत्याशियों की समस्या

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। घोरावल विधानसभा 400 के सामान्य प्रेक्षक रणधीर

कुमार का आगमन शुक्रवार को शाम को हो गया है। प्रेक्षक द्वारा स्ट्रांग रूम का भ्रमण कर रिटर्निंग ऑफिसर रमेश कुमार से विधानसभा के बारे में जानकारी लेते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। सभी राजनैतिक दलों के प्रत्याशी या शिकायतकर्ता सर्किट हाउस लोढ़ी के कक्ष संख्या 201 में सुबह 11 बजे से 12 बजे तक मिल सकते है अथवा मोबाइल नम्बर 9696457155 और ई मेल आई डी हीवतूंस. वद400ध्हउंपस.बवउ पर संपर्क कर सकते है। इस आशय की जानकारी रमेश कुमार रिटर्निंग अधिकारी ने दिया।

समाजवादी पार्टी के प्रचारक हैं आजमगढ़ के आतंकवादी के अब्बाजानः सीएम योगी

सीतापुर के सेवता विधानसभा में जनता को सम्बोधित करते हुए समाजवादी पार्टी पर सीएम योगी ने बोला जोरदार हमला

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को सीतापुर की सेवता विधानसभा में भाजपा प्रत्याशी ज्ञान तिवारी के समर्थन में जनसभा को सम्बोधित करते हुए समाजवादी पार्टी पर जोरदार हमला किया। उन्होंने जनता से कहा कि 2017 से पहले जो सरकार थी उसकी संवेदना गांव के लिए नहीं थी, किसान के लिए नहीं थी, नौजवान के लिए नहीं थी, महिलाओं की सुरक्षा के लिए नहीं थी। सीएम योगी ने कहा कि 'सपा का साथ आतंकवादियों के साथ'। उन्होंने जनता से पूछा–आतंकवादियों के प्रति जिसकी संवेदना होगी उसको आप समर्थन करेंगे क्या?

सीएम योगी ने अपनी बात को पूरा करते हुए कहा कि कल अहमदाबाद के एक न्यायालय के फैसले से स्पष्ट हो जाता है कि अहमदाबाद के सीरियल ब्लास्ट में जो मासूम लोग मारे गये थे और जो आतंकवादी उस घटना को अंजाम देने वाले थे। उसमें से कुछ उत्तर प्रदेश के भी थे। उत्तर प्रदेश के आतंकवादियों में से आजमगढ़ के एक आतंकवादी के पिता, यानि उसके अब्बाजान समाजवादी पार्टी के प्रचारक है। सीएम ने कहा कि समाजवादी सरकार ने 2012 में आतंकवादियों के मुकदमों को वापस लेने का काम किया था। उनकी संवदेना आतंकवादियो के प्रति है और भाजपा की सरकार जब सत्ता में आई तो 86 लाख किसानों का 36 हजार करोड़ के कर्ज माफी का जो निर्णय किया था उसको पूरा करके दिखाया।

सीएम योगी ने कहा कि प्रथम दो चरण के मतदान ने साबित कर दिया है कि भारतीय जनता पार्टी प्रचंड बहुमत की सरकार बना रही है। प्रचंड बहुत की सरकार ही मजबूत सरकार होती है। मजबूत सरकार का मतलब होता है विकास की योजनाओं को मजबूती से करने वाली। जिसके एक हाथ में विकास की छड़ी लेकिन दूसरे हाथ में माफियाओं की छाती पर चढ़ाने के लिए बुलडोजर का स्टेयरिंग हो। तो विकास एक नई ऊंचाईयों पर पहुंचता हुआ दिखाई देगा। सीएम ने कहा कि भाजपा की सरकार ने प्रदेश को अपराधमुक्त, गुंडामुक्त और भयमुक्त वातावरण देकर विकास की प्रक्रिया के साथ जोड़ा है। इसके लिए जैसे पिछली बार सेवता की जनता ने ज्ञान तिवारी को भारी मतों से विधायक बनाकर भेजा था। वैसे ही इस बार भी उनको जिताकर भेजना है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने जो कहा वो करके दिखाया। उन्होंने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण किसने कराया। उन्होंने पूछा कि क्या समाजवादी पार्टी, बसपा, कांग्रेस राम मंदिर का निर्माण कराएगी क्या? तो फिर समर्थन भाजपा को मिलना चाहिये। सीतापुर की धरती को नमन करने के बाद सीएम योगी ने सेवता में कहा 2017 से पहले जब हम लोग उत्तर प्रदेश के किसी भी कोने में जाते थे। उत्तर प्रदेश में सुरक्षा का खतरा था, पूरी तरह से अराजकता थी। परिवार की माताएं–बहनें शिकायत करती थीं कि बेटियों को स्कूल नहीं भेज पा रहे हैं। अन्नदाता किसान खेत नहीं जा पाता था। हर तीन महीनें में दंगा होता था। महीनों कर्फ्यू लगता था। कब बमबाजी, कब गैंगवार शुरू हो जाए कुछ नहीं कहा जा सकता था। पांच साल बाद हम आपके बीच आए हैं। आज मैं आपसे कह सकता हूं इन पांच वर्षों मे उत्तर प्रदेश में कोई दंगा नहीं हुआ। उत्तर प्रदेश में कोई कर्फ्यू नहीं है। जिन बाजारों में पहले बमबाजी होती थी, वहां शांति हैं। जहां पर बमबाजी होती थी, वहां हर–हर, बम–बम का नारा लगाते हुए कांवड़िये धूमधाम से निकलते हैं।

प्रेक्षक ने किया कैसरगंज मतदान केन्द्रों का निरीक्षण

बहराइच। विधानसभा सामान्य निर्वाच–2022 को स्वतन्त्र, निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराये जाने के उद्देश्य से विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र कैसरगंज के सामान्य प्रेक्षक प्रदीप गोविन्द चौधरी ने थाना फखरपुर क्षेत्र अन्तर्गत पूर्व माध्यमिक विद्यालय मरौचा में बने बूथ संख्या 09,10 व 11 पूर्व माध्यमिक विद्यालय बुबकापुर के बूथ संख्या 21, 22 व 23, प्राथमिक विद्यालय बुबकापुर के बूथ संख्या 18, 19 व 20, थाना रानीपुर अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालय अचौलिया के बूथ संख्या 50 व 51, प्राथमिक विद्यालय दहौरा के बूथ संख्या 52 व 53 तथा थाना हुजुरपुर अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालय सशना के बूथ संख्या 62, प्राथमिक विद्यालय राजापुरखुर्द के बूथ संख्या 63, पूर्व माध्यमिक विद्यालय हरनामार सुपनी के बूथ संख्या 58 एवं प्राथमिक विद्यालय, भूपानी के बूथ संख्या 59 का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए मौके पर मौजूद अधिकारियों मूलभूत सुविधाओं यथा बिजली, पेयजल, रैम्प, शौचालय आदि के माकूल बन्दोबस्त कराये जाने के निर्देश दिये।

गुरमा कारागार में लगा विधिक जागरूकता शिविर

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष व मा.

जनपद न्यायाधीश अशोक कुमार यादव प्रथम के आदेशानुसार आज डीएलएसए के पूर्ण कालिक सचिव पंकज कुमार ने जिला कारागार गुरमा का निरीक्षण किया। उन्होंने बैरकों, पाकशाला एवं चिकित्सालय की व्यवस्था के बारे में जानकारी ली। इस दौरान विधिक जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पूर्ण कालिक सचिव पंकज कुमार ने बंदियों को विधिक जानकारी व आगामी लोक अदालत के बारे में बताया गया। साथ ही उन्होंने बैरकों, तथा चिकित्सालय में निरंतर स्वच्छता बनाए रखने पर जोर देने को कहा। निरीक्षण के दौरान उन्होंने रोटी, चावल, दाल व सब्जी मेन्यू के अनुसार बनाने को कहा। महिला बंदियों को पौष्टिक भोजन, साथ रह रहे बच्चों के लिए दूध और शिक्षा की व्यवस्था करने का निर्देश दिया। जेल में स्थापित लीगल ऐड क्लीनिक का निरीक्षण किया। विधिक जागरुकता शिविर में कहा कि यदि किसी बंदी को विधिक सहायता की आवश्यकता हो तो वह जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को प्रार्थना पत्र देकर अपनी समस्या का निस्तारण करा सकता है। यदि किसी बंदी को अपने मामले में पैरवी की आवश्यकता हो तो वह निशुल्क अधिवक्ता प्राप्त कर सकते है। इस दौरान प्रभारी जेल अधीक्षक जेपी द्विवेदी व जेलर व चिकित्साधिकारी डॉ. एपी सिंह मौजूद रहे।

शातिर शराब तस्कर गिरोह गिरफ्तार, 12 लाख कीमत की अवैध शराब बरामद

सीतापुर। पुलिस उपमहानिरीक्षक पुलिस अधीक्षक आरपी सिंह द्वारा जनपद सीतापुर में अपमिश्रित अवैध शराब के विरुद्ध अभियान चलाया जा रहा है एवं अपमिश्रित अवैध शराब के निर्माण, परिवहन एवं बिक्री के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया है। उक्त निर्देश के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी डॉ. राजीव दीक्षित के निकट पर्यवेक्षण में बीती रात को स्वाट सर्विलांस व कोतवाली देहात पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा चेकिंग के दौरान 04 अभियुक्तों व एक बाल अपचारी को ग्राम शाहपुर से गिरफ्तार करते हुए उनके कब्जे से 200–200 लीटर के 03 ड्रम में कुल 600 लीटर स्प्रिट जिससे लगभग दो हजार चार सौ लीटर अपमिश्रित शराब तैयार की जा सकती है। 308 लीटर तैयार शराब, 2500–2500 स्टिकर व ढक्कन, बार कोड लगी खाली शीशी, 05 अदद मोबाइल, एक अदद मोटर साइकिल व शराब बनाने के उपकरणों के साथ गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है।

स्वाट सर्विलांस व थाना कोतवाली देहात पुलिस द्वारा संयुक्त चेकिंग अभियान के दौरान 05 अभियुक्तों रजनेश पुत्र शत्रुहन नि0 ब्रजनगर थाना हरगांव, अक्षय पुत्र श्रीपाल नि0 कुसयारी थाना हरगांव, हरेन्द्र पुत्र शत्रुहन निवासी सोहेतरा थाना खैराबाद, विनीत पुत्र संतोष कुमार निवासी केसरवा नया थाना हरगांव, एक बाल अपचारी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। उनके कब्जे से 200–200 लीटर के 03 ड्रम में कुल 600 लीटर स्प्रिट जिससे लगभग दो हजार चार सौ लीटर अपमिश्रित शराब तैयार की जा सकती है। 50–50 लीटर के 04 ड्रम जिसमें तैयार शराब 200 लीटर, 6 पेटी में पैक 270 शीशी, प्रत्येक 200 उस कुल 108 लीटर, 2500 स्टिकर लगी खाली शीशी, 2500 ढक्कन, 2500 कूट रचित बार कोड, दो कीप, एक किलो चीनी, एक अदद बड़ा बर्तन, 05 अदद मोबाइल, एक अदद मोटर साइकिल स्प्लेण्डर बरामद हुए हैं। बरामद शराब की अनुमानित कीमत करीब 12 लाख रुपये आंकी गयी है। बरामदगी के सम्बन्ध में थाना कोतवाली देहात पर मु0अ0सं0 59÷22 धारा 420, 467, 471, 270, 272 भादवि 60 आबकारी अधिनियम व 51÷63 कॉपीराइट एक्ट पंजीकृत कर अभियुक्तों को जेल भेजा जा रहा है। अभियुक्तगण ने पूछताछ में बताया कि हम लोग बाहर से स्प्रिट, खाली शीशी, ढक्कन, बार कोड आदि लाते हैं और मिलकर माल तैयार करते हैं उसके बाद गत्ते में अपने वाहन से ले जाकर सप्लाई कर देते हैं। अभियुक्तों के विरुद्ध नियमानुसार निरोधात्मक कार्यवाही सुनिश्चित करते हुए उनके द्वारा अपराध से अर्जित संपत्ति के संबंध में सूचना, साक्ष्य संकलित कर जब्तीकरण की कार्यवाही की जायेगी।

निर्धारित समय तिथि पर वाहन उपलब्ध न कराने पर दर्ज होगी एफआईआर

सीतापुर। विधान सभा सामान्य निर्वाचन–2022 को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु जनपद में हल्के व्यक्तिगत वाहन एवं व्यवसायिक वाहन बसमिनी बस, स्कूल वाहन व अन्य भारी व मध्यम वाहनो को जिलाधिकारी के आदेशानुसार अधिग्रहीत किया गया है। उक्त के क्रम में जनपद में सेक्टर मजिस्ट्रेट हेतु 325, उड़नदस्ता टीम, स्टेटिक टीम, स्टेटिक सर्विलांस टीम सहित 673 वाहनों, पुलिस के प्रयोग हेतु 1038 हल्के वाहनों सहित कुल 1711 हल्के वाहनों की आवश्यकता है। साथ ही पोलिंग पार्टी हेतु 767 बसमिनी बस की आवश्यकता है। जिसके अन्तर्गत विधानसभा महोली में 87, सीतापुर में 105, हरगांव में 85, लहरपुर 98, बिसवां में 78, सेउता में 78, महमूदाबाद में 80, सिधौली में 77 व मिश्रिख में 71 बसमिनी बस की आवश्यकता है। उक्त के दृष्टिगत जिलाधिकारी के निर्देश से हल्के व्यवसायिक व व्यक्तिगत वाहन को 17 फरवरी के सायंकाल 05ः00 बजे व बसमिनी बस व अन्य भारी, मध्यम वाहन को 20 फरवरी की सायं 5 बजे आरएमपी डिग्री कॉलेज के सामने स्थित मिलेट्री ग्रास फार्म में प्रभारी अधिकारी यातायात के कार्यालय में उपस्थित होने हेतु अधिग्रहण आदेश निर्गत किये गये हैं। सहायक प्रभारी अधिकारी यातायात/सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन) डा0 उदित नारायण ने बताया कि जनपद में बसों की आवश्यकता के अनुरूप उपलब्धता में कमी के दृष्टिगत 125 बसें शाहजहांपुर से, 125 बसें बहराईच से, 101 बसें बाराबंकी से व 100 बसें आवंटित की गयी हैं। इसी प्रकार पांचवें चरण में जनपद सीतापुर से जनपद लखनऊ से जनपद से कुल 451 बसमिनी बस अन्य जनपदो से जनपद सीतापुर हेतु आवंटित की गयी हैं। इसी प्रकार पांचवें चरण में जनपद सीतापुर से जनपद बहराईच हेतु 116 बसें व जनपद गोण्डा हेतु 102 बसें आवंटित की गयी है। एआरटीओ (प्रवर्तन) डा0 उदित नारायण ने बताया कि समस्त वाहन स्वामियो को निर्धारित समय, तिथि, स्थल पर वाहन उपलब्ध कराने शतप्रतिशत अनुपालन हेतु वाहन स्वामी चालक अवगत कराया। साथ ही बताया कि निर्धारित समय, तिथि व स्थल पर वाहन उपलब्ध न कराये जाने पर लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम–1951 की सुसंगत धाराओं के अन्तर्गत प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करायी जायेगी। एआरटीओ (प्रशासन) माला बाजपेयी ने बताया कि ऐसे वाहनो का पंजीयन निरस्त किया जायेगा साथ ही परमिट निरस्त करने के लिये भी संस्तुति की जायेगी, जिसका समस्त दायित्व वाहन स्वामी का होगा।

पुलिस ने पकड़े चार जुआरी

नैमिषारण्य (सीतापुर)। स्थानीय थाने की पुलिस ने चार जुआरियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। जानकारी अनुसार कुछ समय से मीरापुर ग्राम के समीप भिस्टर बाग में जुआरियों द्वारा लाखों रुपये का जुआ खेला जा रहा था। मुखबिर द्वारा सूचना मिलते ही कांस्टेबल विकास मलिक, विकास चौधरी, अभय सैनी, अजय वर्मा, हेमंत, अमित, शुभम पाल ने बाग में छापा मारकर जुआ खेल रहे चार जुआरियों को गिरफ्तार कर लिया। जबकि पांच जुआरी मौके भाग निकले। गिरफ्तार किए गए सिद्धीकपुर निवासी रामविलास, औरंगाबाद निवासी राजकुमार, मीरापुर निवासी सुरेन्द्र, लोधौरा निवासी पंचम के विरुद्ध विधिक कार्यवाही की गयी है।

चले थे अकेले हुए आज इतने, नहीं तब डरे तो भला अब डरेंगे : प्रशांत सिंह

सीतापुर। अधिवक्ता परिषद द्वारा आयोजित वर्तमान परिदृश्य में अधिवक्ताओं की भूमिका विषयक अधिवक्ता समागम का आयोजन गुरुवार को बार एसोसिएशन सभागार में किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि वरिष्ठ प्रचारक कार्यपालक अधिकारी भारती भवन लखनऊ वीरेन्द्र सिंह, मुख्य वक्ता मुख्य स्थायी अधिवक्ता प्रथम उ0प्र0 सरकार एवं सह अध्यक्ष बार कौंसिल ऑफ उ0प्र0 प्रशान्त सिंह अटल, विशिष्ट अतिथि विभाग प्रचारक राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ सीतापुर बैरिस्टर, अधिवक्ता परिषद अवध प्रान्त उपाध्यक्ष ओम प्रकाश गुप्त, मंत्री अरविन्द सिंह गौर, विशेष आमंत्रित सदस्य हरिकरन लाल वर्मा, अमरीष वर्मा, सवित्र वर्धन सिंह, मृत्युंजय प्रताप सिंह, बार एसोसिएशन अध्यक्ष हरीश त्रिपाठी, सचिव संजय सिंह गौड़, प्रगति बाजपेई, सरिता त्रिपाठी ने वन्दे मातरम् का गान किया। इसी क्रम में उपस्थित अतिथि व विशिष्ट अतिथियों का स्वागत अधिवक्ताओं द्वारा पुष्प गुच्छ देकर किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता प्रशान्त सिंह अटल सह अध्यक्ष बार कौन्सिल ऑफ ने स्व0 अटल बिहारी बाजपेई की पंक्तियां चले थे अकेले हुए आज इतने, नहीं तब डरे तो भला अब डरेंगे।

रहें। कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष सुरेश प्रकाश श्रीवास्तव ने तथा संचालन श्रीराम रस्तोगी ने किया। जबकि अतिथियों का परिचय गिरीश मिश्र ने कराया। वहीं संयोजन में परिषद के महामंत्री गोविन्द मिश्रा महामंत्री का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

समागम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्जवलित कर किया गया। तत्पश्चात अधिवक्ता आरती राय के नेतृत्व में दीप गगन

बिरोधों के सागर में चट्टान है हम, जो हमसे लड़ेंगे मौत अपनी मरेंगे से अपनी बात रखी। श्री अटल ने इसी के साथ अधिवक्ता हित में बार कौंसिल द्वारा जारी योजनाओं का बताया। जिन्होंने अधिवक्ताओं को शत. प्रतिशत मतदान के लिए प्रेषित करते हुए कई दशक पूर्व से राष्ट्रहित में अधिवक्ताओं के योगदान पर अपनी बात रखी। वहीं मुख्य अतिथि वीरेन्द्र सिंह ने कहा कि न्याय व्यवस्था अधिवक्ताओं पर टिकी है। अधिवक्ता उपलब्ध है इसलिए वादकारियों को सुलभ न्याय मिल रहा है। अधिवक्ता की एकता व शक्ति राष्ट्रनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विभाग प्रचारक बैरिस्टर ने कहा कि हमें शत.प्रतिशत मतदान कर राष्ट्र हित में काम करना है, जिसके लिए इस उत्सव को मिल जुलकर मनाना है। मंत्री अरविन्द सिंह गौर ने विश्व में भारत की पहचान बनाने के लिए उत्तर प्रदेश चुनाव को महत्वपूर्ण उत्तर के रूप में व्याख्या दी। इसी के साथ कार्यक्रम को अन्य वक्ताओं ने भी सम्बोधित किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। इस मौके पर बार एसोसिएशन के पदाधिकारी व अन्य अधिवक्तागण मौजूद रहें।

क्षत्रिय महासभा युवा ने दिया सुरेश राही को समर्थन

सीतापुर। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा युवा के जिलाध्यक्ष प्रभाकर सिंह चौहान ने 147 हरगांव (सु0) विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी सुरेश राही के आवास पर जाकर उन्हें महासभा युवा की ओर से अपना समर्थन पत्र पूर्व विधायक रमेश राही को सौंपा। श्री चौहान ने अपने संगठन की ओर से समर्थन पत्र देते हुए कहा है कि विधायक सुरेश राही ने क्षत्रिय समाज के लोगों का हमेशा मान–सम्मान किया है। इसलिए क्षत्रिय समाज उन्हें जिताने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रहा है। उन्होंने क्षत्रिय समाज से अपील की है कि वह भाजपा प्रत्याशी सुरेश राही को भारी मतों से जितायें और सनातन विचार धारा को मजबूत बनाने का कार्य करें। इस अवसर पर अनुज सिंह चौहान, शिव सेना जिलाध्यक्ष गोविन्द सहाय गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

सांडी से भाजपा प्रत्याशी प्रभास ने मांगे वोट

हरदोई।सांडी विधानसभा में भाजपा प्रत्याशी प्रभाष कुमार के लिए सदर सांसद जयप्रकाश रावत, एवं संगठन से भाजपा जिला मंत्री अविनाश पांडेय ने विभिन्न गांवो में जाकर जनता से समर्थन मांगा। क्षेत्र की जनता ने आश्वस्त किया कि इस बार पुनः सांडी में कमल खिलने वाला है। जनता योगी जी की मोदी जी की योजनाओं से प्रभावित है एवं शासन प्रशासन व्यवस्था की सराहना करते हुए भाजपा के साथ है। इस अवसर पर ग्राम गोंडा राव,सारीपुर हीरालाल कसमंडी,नेकुड़ी,संविदा आदि विभिन्न गांव में भ्रमण किया। साथ में भाजपा के वरिष्ठ नेता आशुतोष शुक्ला राकू, अनुसूचित मोर्चा के जिला अध्यक्ष महिपाल गौतम, पत्रिका प्रकाशन विभाग सहसंयोजक आशुतोष बाजपाई,अखिलेश मिश्रा भवानी सिंह,अमित मिश्रा, गुड्डू मिश्रा प्रधान,जितेंद्र सिंह,कमलेश कुमार, विमल कनौजिया आदि प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

माईक्रो आब्जर्वर चुनाव आयोग की आंख होते हैं: प्रेक्षक

हरदोई। विधान सभा सामान्य निर्वाचन 2022 के चौथे चरण में 23 फरवरी 2022 को जनपद में होने वाले मतदान को निष्पक्ष,शान्तिपूर्ण, एवं भयमुक्त कराने हेतु विधान सभावार क्रिट्रिकल बूथों पर मतदान कराने हेतु जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा नामित प्रथम पाली में सवायजपुर के 92, शाहाबाद के 96, गोपामऊ के 97 माईक्रो आब्जर्वर को रसखान प्रेक्षागार आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में मतदान कराने की जानकारी देते हुए प्रेक्षक ने कहा कि आब्जर्वर बूथ पर होने वाली समस्त गतिविधि पर नजर रखें। इसी तरह द्वितीय पाली के प्रशिक्षण में विधान सभी साण्डी के 101, बालामऊ 70 तथा बिलग्राम –मल्लावां के 86 क्रिट्रिकल बूथों के माईक्रो आब्जर्वर को प्रेक्षकों ने बूथों पर सकुशल सम्पन्न कराने की जानकारी विस्तार से दी। प्रशिक्षण में माईक्रो आब्जर्वरों ने ईवीएम एवं वीवी पैड संचालनक के संबंध में भी जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण में सहायक अभियंता डीआरडीए राजेश कुमार सिंह तथा जिला सूचना अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

हेलीपैड एवं जनसभा स्थल के आस-पास के क्षेत्रों में ड्रोन गतिविधि निषेध रहेगीः नगर मजिस्ट्रेट

हरदोई प्रभारी अधिकारी (वीआईपी)/नगर मजिस्ट्रेट डॉ सदानन्द गुप्ता ने क्षेत्राधिकारी नगर, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली शहर तथा अधिशासी अभियंता नगर पालिका परिषद हरदोई को अवगत कराया है कि कि मा० प्रधानमंत्री जी का हरदोई भ्रमण कार्यक्रम के दौरान 20 फरवरी 2022 को रिजर्व पुलिस लाइन में हेलीकाप्टर से लैंडिंग होगी, तत्पश्चात् कार द्वारा सड़क मार्ग से सीएसएन कालेज, हरदोई में चुनावी जनसभा को सम्बोधित करेंगे, जिस हेतु सुरक्षा के दृष्टिगत हेलीपैड एवं जनसभा स्थल एवं स्थल के आस–पास के क्षेत्रों में ड्रोन गतिविधि निषेध रखने के निर्देश दिये गये है। उन्होंने कहा है कि मा० प्रधानमंत्री जी की सुरक्षा के दृष्टिगत रिजर्व पुलिस लाइन में स्थित हेलीपैड के आस–पास तथा सीएसएन कालेज में प्रस्तावित चुनावी जनसभा स्थल के आस–पास के क्षेत्रों में ड्रोन गतिविधि पर पूर्णतया निषेध रहेगी, इसलिए उक्त आदेश का अनुपालन कड़ाई कराना सुनिश्चित करें।

डाकघर से किशोरी की साइकिल चोरी

हरदोई। कस्बे में के उप डाकघर में आधार कार्ड संशोधित कराने आई किशोरी की साइकिल चोरी हो गई।मामले की सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मामले की छानबीन की है। अरवल थाना क्षेत्र के कतरनापुर गांव निवासी राजवती पुत्री राजेंद्र दोपहर हरपालपुर कस्बे के उपडाकघर के बाहर साइकिल खड़ी करके अंदर आधार कार्ड संशोधन कराने चली गई। बाहर आने पर देखा तो साइकिल गायब थी। किशोरी ने मामले की तहरीर पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर मामले की छानबीन की है। सूत्रों का कहना है किडाकघर में यदि सीसीटीवी कैमरा लगा होता तो किशोरी की गायब साइकिल व चोर का पुलिस आसानी से पता लगा सकती थी। प्रभारी निरीक्षक मकान दीपक ने बताया कि किशोरी की केप साइकिल का पता लगाया जा रहा है।

मधु हत्याकांडः फ्लैट के भीतर केवल मधु व नौकरानी हैं,उसके बाद ही दाखिल हुए थे बदमाश

कानपुर। पॉश इलाके स्वरूप नगर के कानकार्ड अपार्टमेंट में बीते दिनों फ्लैट के अंदर रात में ज्योतिषविद् मधु कपूर की हत्या की तह तक पुलिस पहुंचने का प्रयास कर रही है। हत्याकांड को अंजाम देने वाले बदमाशों ने जब पूरी तस्दीक कर ली कि फ्लैट के भीतर केवल मधु व नौकरानी हैं, उसके बाद ही वे दाखिल हुए थे। इसका खुलासा फ्लैट के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज से हुआ है। फ्लैट के गेट के बाहर और भीतर कैमरे लगे हुए हैं। पुलिस ने इन दोनों के फुटेज जुटाए हैं। जिससे बदमाशों का पूरा हुलिया साफ हुआ है। एक बदमाश काली जैकेट पहने हुए है तो दूसरे ने हुडी पहन रखी थी। दोनों ने अपने मास्क नहीं उतारे थे। सोमवार रात करीब आठ बजे नौकरानी के दरवाजा खोलने पर दोनों तुरंत भीतर नहीं जाते हैं। 2 मिनट 2 सेकेंड तक वह वहीं रहते हैं। जब यकीन हो जाता है अंदर सिर्फ मधु हैं इसके बाद भीतर जाते हैं। फ्लैट के भीतर लगे सीसीटीवी में बदमाश कैद हुए हैं। फुटेज में जैकेट पहने बदमाश आगे रहता है। उसके पीछे सावित्री। आखिर में दूसरा बदमाश आता है। वही दरवाजा बंद कर देता है। उसके बाद दोनों कमरे में जाकर चाकू के बल पर पहले सावित्री को बंधक बनाते हैं फिर मधु की हत्या कर दी।

जिस वक्त बदमाश फ्लैट के गेट पर खड़े थे, उसी दौरान अपार्टमेंट निवासी कोई वहां पर आता है। उससे बदमाश कुछ कहते भी हैं। मगर उसका चेहरा आदि कैमरे में कैद नहीं होता है। सिर्फ पैर नजर आते हैं। उसके बाद वह चला जाता है। आशंका है कि वह कोई महिला है लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हुई है। एडीसीपी पश्चिम का कहना है कि अभी ये शख्स सामने नहीं आया है। पता किया जा रहा है वह कौन है। जिससे बदमाशों के बारे में कुछ और जानकारी मिल सके। इस हत्याकांड की चश्मदीद नौकरानी सावित्री को पुलिस ने पूछताछ के बाद छोड़ दिया है। सावित्री ने बताया कि फ्लैट में शांति होने पर जब उसे लगा कि बदमाश जा चुके हैं तो किसी तरह मुंह से रुमाल निकाला और इसके बाद उसने बाथरूम से ही मदद के लिए चिल्लाने लगी। नीरू हमें बचाओ,बचाओ का शोर किया। जब जब ऊपर के बाथरूम में कोई धमक सुनाई पड़ती तो वह तेज–तेज चिल्लाती, लेकिन उसकी किसी ने नहीं सुनी।

लापता मासूम का शव पेड़ के नीचे पड़ा मिला,फैली सनसनी

पुलिस ने की फॉरेंसिक टीम के साथ घटनास्थल की जांच

कानपुर। सचेंडी में शाम लापता मासूम का शव देर रात पीपल के पेड़ के नीचे पड़ा मिला। गांव में मासूम का शव देखकर लोगों में सनसनी फैल गई और पुलिस ने फॉरेंसिक टीम के साथ घटनास्थल की जांच की। उसकी जेब से एक बिस्कुट मिला है और पास के मंदिर में उसकी चप्पलें मिली हैं। पुलिस ने मंदिर के कमरे में नशे में धुत सोते मिले युवक व उसके भाइयों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की है। अभी कुछ दिन पहले ही नर्वल में भी ऐसी वारदात सामने आई थी, जिसमें मासूम की आंख में कील ठोककर हत्या कर दी गई थी और कुकर्म की भी बात सामने आई थी। इस वारदात को लेकर भी ऐसा ही संदेह होने लगा है।

सचेंडी थाना क्षेत्र के पकरी गांव निवासी शिव मोहन सिंह ट्रक चालक हैं और चार माह पहले हादसे में उनके दोनों पैरों में फ्रैक्चर हो गया था। इसके चलते इन दिनों में वह घर पर ही रहते हैं। परिवार में पत्नी इंदिरा व दो बेटे सूरज व सीमू हैं। उनका सात वर्षीय तीसरा नंबर का बेटा शौर्य शाम रोजाना की तरह गांव के बाहर मंदिर के 92 वर्षीय महंत को दूध देने के लिए घर से निकला था। वह देर रात तक घर नहीं लौटा तो स्वजन ढूंढते हुए मंदिर पहुंचे। यहां पर महंत ने शौर्य के दूध देने के बाद तुरंत लौटने की जानकारी दी। बदहवास स्वजन शौर्य की तलाश करते हुए रास्ते में हनुमान मंदिर पहुंचे, जहां पीपल के पेड़ के पास शौर्य का शव पड़ा देखकर सन्न रह गए।

तीन लोगों को हिरासत में लिया

सूचना पर पहुंची पुलिस व फॉरेंसिक टीम ने पड़ताल की। शौर्य के मुंह से निकले झाग निकल रहा था और पुलिस को उसकी जेब से बिस्किट मिले। इसके चलते कुकर्म के बाद मासूम की हत्या किए जाने की आशंका जता मंदिर के पास बने कमरे में पुलिस गई। कमरे में शौर्य की चप्पलें बरामद हुईं तो वहां सो रहे नशे में धुत युवक को हिरासत में लिया। इस बीच आए उसके दो भाइयों को भी पुलिस ने पकड़ लिया। सचेंडी थानाध्यक्ष विनोद कुमार सिंह ने बताया कि घटना के संबंध में कई बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

पेड़ से लटकता मिला युवक का शव

नैमिषारण्य (सीतापुर)। थाना नैमिषारण्य अन्तर्गत ग्राम गोपीली में बाइस वर्षीय भइयालाल उर्फ लाला पुत्र रामसागर ने अज्ञात कारणों से फ ाँसी पर लटक कर जान दे दी है। भइयालाल तीन दिन से अपने घर भी नहीं आया था। सुबह इस्माइपुर– ब्रम्हावली चकरोट के किनारे लगे आम के पेड़ पर शाल चादर के फ ंदे से लाला का शव लटकता देखा गया। शव के पैरों के नीचे मोटर साइकिल पड़ी थी। कयासों लगाया जा रहा है कि लाला ने मोटर साइकिल पर खड़े होकर फांसी लगायी है। नैमिष पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

जादू के करतबों के माध्यम से कुष्ठ रोग के बारे में किया गया जागरुक

सिधौली (सीतापुर)। राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिधौली में कुष्ठ के प्रति समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करने व औषधियों के प्रति लोगों को जागरूक करने हेतु जादू के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से उपस्थित लोगों को जागरूक किया गया। राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के तहत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सिधौली में मुन्ना जादूगर ने जादू के करतबों के माध्यम से कुष्ठ रोग के बारे में लोगों को जागरूक किया गया। इस अवसर पर अधीक्षक डा. राकेश वर्मा ने कुष्ठ रोग की पहचान के बारे में जानकारी दी। श्री वर्मा ने बताया कि यदि शरीर पर हल्के या तांबई रंग के धब्बे हों और उनमें सुन्न पन हो तो यह कुष्ठ रोग हो सकता है। इसके साथ ही हाथ या पैरों में अस्थिरता या झुनझुनी, नसों में दर्द कान या चेहरे पर सूजन, हाथ या पैरों में सुन्नता या घाव होने पर भी चिकित्सक से परामर्श अवश्य लेना चाहिए आगे जानकारी देते हुए बताया कि हर दाग कुष्ठ रोग नहीं होता है। यदि समय से उपचार शुरू कर दिया जाये तो कुष्ठ रोग पूरी तरह से मल्टी ड्रग थेरेपी एमडीटी द्वारा ठीक हो जाता है। एमडीटी प्रदेश के सभी सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं पर निःशुल्क उपलब्ध है। इस मौके पर स्टाफ सहित लोग उपस्थित रहे।

जाजमऊ के पुराने गंगापुल पर कंटेनर रेलिंग तोड़ता हुआ नीचे जा गिरा

उन्नाव। जाजमऊ के पुराने गंगापुल पर सुबह एक कंटेनर रेलिंग तोड़ता हुआ नीचे जा गिरा। ट्रक का चालक और खलासी दोनों ट्रक के अंदर फंस गए। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से दोनों को बाहर निकाला। गंभीर हालत में पुलिस ने उन्हें जिला अस्पताल भेजा। जहां उपचार के दौरान शाम को ट्रक चालक की मौत हो गई। खलासी का उपचार अभी चल रहा है। गंगाघाट कोतवाली प्रभारी जेबी पांडेय ने बताया कि लखनऊ से एक कंटेनर डाक पार्सल लादकर सूरत जा रहा था। जाजमऊ के पुराने गंगापुल पर अनियंत्रित होकर रेलिंग तोड़ता हुआ नीचे जा गिरा। जिसमें कंटेनर चालक रईस पुत्र शम्मी निवासी ग्राम ग्वारदा तहसील तिजारा जिला अलवर राजस्थान की उपचार के दौरान जिला अस्पताल में मौत हो गई। वहीं, खलासी राहुल पुत्र नसीब खान निवासी ग्राम खो तहसील रामगढ़ जिला अलवर राजस्थान का उपचार चल रहा है।

हिन्दी दैनिक
बुद्ध का संदेश
समाचार पत्र
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स, ज्योतिनगर, मधुकरपुर, निकट हीरो हौंडा एजेन्सी, सिद्धार्थनगर, 272207 उ.प्र. से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.- UPHIN/2012/49458
संस्थापकः- स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादकः- राजेश कुमार शर्मा
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इन से उत्पन्न समस्त विवाद जनपद सिद्धार्थनगर, न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।
8795951917, 9453824459
ई-न्यूज पेपरः-www.budhakasandesh.com
E-Mail ID:. budhakasandeshnews@gmail.com

अपने स्किन केयर रूटीन में शामिल करें ये फेशियल, मिलेंगे कई फायदे

वैसे तो आपको कॉस्मेटिक की दुकानों से तरह–तरह की फेशियल किट मिल जाएंगी, लेकिन उनमें मौजूद क्रीम, जेल और स्क्रब आदि केमिकल्स युक्त होते हैं, जो त्वचा को कुछ मिनट का निखार और लंबे समय तक कई तरह की समस्याएं दे सकते हैं। इसलिए बेहतर होगा कि आप उनका इस्तेमाल न करें बल्कि घर पर ही कुछ फेशियल फेस पैक बनाकर लगाएं। आइए आज हम आपको कुछ फेशियल बनाने और लगाने का तरीका बताते हैं।

केला, शहद और ओट्स का फेशियल

केला और शहद त्वचा को पोषित और मॉइश्चराइज करने में मदद कर सकता है। वहीं, ओट्स डेड स्किन सेल्स से राहत दिलाने और त्वचा को निखारने में कारगर है। फेशियल के लिए पहले एक कटोरी में एक चम्मच शहद, दो बड़ी चम्मच ओट्स और एक केला (मैश किया हुआ) मिलाएं। अब इस मिश्रण को अपने चेहरे और गर्दन पर लगाकर हल्के हाथों से मसाज करें और 10–15 मिनट के बाद चेहरे और गर्दन को गुनगुने पानी से धो लें।

योगर्ट और अंडे का फेशियल

योगर्ट त्वचा को मुलायम बनाने और गहराई से साफ करने में मदद कर सकता है। वहीं, अंडा त्वचा के अतिरिक्त तैलीय प्रभाव को कम करने में सहायता प्रदान कर सकता है। फेशियल के लिए सबसे पहले एक कटोरी में एक अंडे का सफेद भाग और एक चम्मच योगर्ट मिलाएं। अब इस मिश्रण को अच्छे से फेंटे और अपने चेहरे पर लगाकर हल्के हाथों से मसाज करें और जब मिश्रण सूख जाए तो चेहरे को ठंडे पानी से धो लें।

एवोकाडो, नींबू और शहद का फेशियल

यह एवोकाडो, नींबू और शहद का फेशियल रूखी त्वचा वाले लोगों के लिए एकदम परफेक्ट है क्योंकि यह त्वचा को हाइड्रेशन और नमी प्रदान करने में कारगर है। इस फेशियल के लिए पहले एक कटोरी में एक बड़ी चम्मच एवोकाडो का गूदा, एक चम्मच शहद और एक चम्मच नींबू का रस मिलाएं, फिर इस मिश्रण को अपने चेहरे पर लगाकर सर्कुलर मोशन में मलें और जब मिश्रण सूख जाए तो चेहरे को पानी से धो लें।

कॉफी और योगर्ट का फेशियलः कॉफी और योगर्ट का यह फेशियल प्रदूषण और अन्य कारकों के कारण क्षतिग्रस्त हुई त्वचा को पुनर्जीवित करने में मदद कर सकता है। इसके लिए सबसे पहले एक कटोरी में एक चम्मच कॉफी पाउडर, एक चम्मच योगर्ट और एक चम्मच शहद को मिलाएं, फिर इस मिश्रण को अपने चेहरे पर लगाकर इसे 20–25 मिनट के बाद धो लें। इसके बाद चेहरे को तौलिये सो थपथपाकर सुखाएं और मॉइश्चराइजर लगाएं।

साउथ से टीवी में एंट्री करने को लेकर मदालसा शर्मा ने कही बड़ी बात

टेलीविजन के चर्चित सीरियल अनुपमा में मदालसा शर्मा काव्या का किरदार निभाती दिखाई दे रही हैं। इन्होंने घर–घर में अपनी पहचान बना ली है, मगर क्या आप जानते हैं कि टेलीविजन

डेब्यू करने से पहले मदालसा शर्मा ने कुछ बॉलीवुड तथा कई दक्षिण भारतीय फिल्में की हैं। मदालसा शर्मा, अभिनेत्री शीला शर्मा तथा निर्देशक सुभाष शर्मा की बेटी हैं। बॉलीवुड से टेलीविजन में अपने डेब्यू पर मदालसा शर्मा ने एक इंटरव्यू में खुलकर चर्चा की। इसके साथ ही मदालसा शर्मा ने कहा, मूवीज में काम करना लाजमी था। मेरे माता–पिता इसी फील्ड से संबंध रखते हैं। मैंने कई अच्छे दक्षिण भारतीय फिल्म के मशहूर स्टार्स तथा निर्देशकों संग काम किया है। तत्पश्चात, मेरी मिमोह चक्रवर्ती से शादी हो गई। शादी के तुरंत पश्चात् मेरे पास अनुपमा का ऑफर आया। मैंने उसे एक्सेप्ट किया तथा टेलीविजन में डेब्यू किया। मदालसा शर्मा ने अपने बॉलीवुड करियर पर बताया, ऐसा नहीं है कि मैंने अपना वह करियर छोड़ दिया है। मुझे सिर्फ अब यह भरोसा हो गया है कि टेलीविजन किसी बॉलीवुड फिल्म को करने से कुछ कम नहीं है। टेलीविजन ने मुझे अवसर दिया है परिवार संग वक्त गुजारने तथा प्रोफेशनल लाइफ को मैनेज करने का। यह सब किस्मत है। आप किस प्रकार आपके मार्ग में आने वाली चीजों को एक्सेप्ट करते हो, यह आप पर निर्भर करता है। मुझे पूरा भरोसा है कि अभी भी फिल्मी जगत में मेरे लिए कुछ इंट्रेस्टिंग प्रोजेक्ट होगा। मैं यूनिवर्स में विश्वास रखती हूं।

नंदिता दास की फिल्म से बड़े पर्दे पर लौटेंगे कपिल शर्मा, निभाएंगे यह किरदार

कॉमेडियन कपिल शर्मा अब एक बार फिर एक्टिंग जगत में अपना जलवा बिखेरने के लिए तैयार हैं। वह अभिनेत्री और निर्देशक नंदिता दास की फिल्म से रुपहले पर्दे पर अपनी वापसी करने वाले हैं। नंदिता और कपिल ने सोशल मीडिया पर अपनी इस फिल्म का ऐलान कर दिया है, जिसके बाद प्रशंसक फूले नहीं समा रहे हैं। दोनों एक–दूसरे के साथ काम करने को लेकर बेहद उत्साहित हैं।

इस फिल्म में कपिल शर्मा पहले कभी नहीं देखे गए अवतार में नजर आएंगे। वह एक फूड डिलिवरी राइडर के रूप में दिखाई देंगे। फिल्म में शहाना गोस्वामी, कपिल की पत्नी की भूमिका निभाएंगी। इस महीने के अंत में भुवनेश्वर, ओडिशा में फिल्म की शूटिंग शुरू की जाएगी। नंदिता ने सोशल मीडिया पर लिखा, अप्लॉज एंटरटेनमेंट और नंदिता दास इनिशिएटिव्स साल का सबसे रोमांचक प्रोजेक्ट लेकर आ रहे हैं। कपिल के साथ शहाना इस फिल्म से जुड़ेंगी। आपका आशीर्वाद चाहिए।

कपिल ने कहा, मैं इसे लेकर बहुत उत्साहित हूं, इसलिए नहीं कि मैं एक फिल्म कर रहा हूं, बल्कि इसलिए कि मैं नंदिता की फिल्म का हीरो हूं, जिन्हें मैंने एक्टर और डायरेक्टर दोनों के रूप में देखा है। उन्होंने कहा, नंदिता का चीजों को देखने का एक बहुत ही अलग और गहरा नजरिया है। मुझे खुशी है कि दर्शकों को मेरा एक नया अवतार देखने को मिलेगा। मैं खुश हूं कि इसमें कुछ नया करने का मौका मिला है।

नंदिता कहती हैं, फिल्म में वही दिखाने की कोशिश की गई है कि आम लोगों की नजरों में क्या छिपा है? एक दिन मेरी स्क्रीन पर कपिल शर्मा अचानक से उभरकर सामने आ गए। उन्होंने कहा, मैंने उनका शो नहीं देखा है, लेकिन मैं उन्हें पूरी तरह से आम आदमी को रीप्रेजेंट करते हुए देख सकती थी। भले ही वह इनमें से एक नहीं हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि वह अपनी बेबाकी से सभी को हैरान कर देंगे।

नंदिता ने अपने करियर में 10 भाषाओं की लगभग 40 से अधिक फिल्मों में काम किया है। एक्टिंग के अलावा नंदिता दास निर्देशन के क्षेत्र में भी एक बड़ा नाम हैं। उनके निर्देशन में बनी बायोपिक मंटो को कई फिल्म समारोहों में सराहा गया था।

कपिल के करियर की बात करें तो वह फुल फॉर्म में दिख रहे हैं। द कपिल शर्मा शो के अलावा वह नेटफ्लिक्स पर शो आई एम नॉट डन यट लेकर आए। अब उन्होंने अपनी नई फिल्म का ऐलान भी कर दिया है। इससे पहले कपिल दो फिल्मों में बतौर लीड एक्टर दिखे थे। किस किस को प्यार करूं से उन्होंने बॉलीवुड में कदम रखा था। इसके बाद कपिल को फिरंगी और इट्स माय लाइफ जैसी फिल्मों में भी देखा गया।

पर्दे पर दमदार अभिनय करना चाहती हैं वाणी कपूर

अभिनेत्री वाणी कपूर का कहना है कि वह पर्दे पर दमदार अभिनय करना चाहती हैं और उन्हें लगता है कि उनकी आने वाली फिल्म शमशेरा उनके लिए एकदम सही है। वाणी फिल्म में एक कलाकार की भूमिका निभा रही हैं, वह कहती हैं कि शमशेरा एक नाटकीय अनुभव है और मैं वास्तव में खुश हूं कि हमारे पास रिलीज तारीख है। हम मनोरंजन करने के लिए तैयार हैं। वह आगे कहती हैं कि शमशेरा एक ऐसी फिल्म है जो मेरे दिल के बेहद करीब है और हममें से प्रत्येक ने इसे एक ऐसी फिल्म बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है, जिसे सभी आयु वर्ग के लोग पसंद करेंगे।

चंडीगढ़ करे आशिकी से अलग, मैं दर्शकों को एक ऐसा प्रदर्शन देना चाहती हूं, जिसे वे फिर से पसंद करेंगे। मैं स्क्रीन पर मजबूत प्रदर्शन देना चाहती हूं और शमशेरा मेरे लिए एकदम सही है। फिल्म में वाणी को सुपरस्टार रणबीर के साथ देखा जाएगा। आदित्य चोपड़ा द्वारा निर्मित करण मल्होत्रा की एक्शन फिल्म 22 जुलाई को हिंदी, तमिल और तेलुगु में रिलीज होने के लिए तैयार है।

स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने का कारण बन सकता है ब्रेड का अधिक सेवन

अमूमन लोगों का मानना है कि सफेद ब्रेड की तुलना में ब्राउन ब्रेड का सेवन स्वास्थ्य के लिए बेहतर है, लेकिन ऐसा तभी संभव है, जब आप सीमित मात्रा में इसका सेवन करें। बात चाहें सफेद ब्रेड की हो या ब्राउन ब्रेड की, अगर आप इनका अधिक सेवन करते हैं तो ये स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने का कारण बन सकती हैं। आइए जानते हैं कि ब्रेड के अधिक सेवन से कौन–कौन सी समस्याएं हो सकती हैं।

बढ़ सकता है वजन

ब्रेड का अधिक सेवन बढ़ते वजन का कारण बन सकता है और इसकी मुख्य वजह इसमें मौजूद कार्बोहाइड्रेट और कैलोरी है। इस समस्या को सामान्य न समझें क्योंकि यह शरीर को कई अन्य बीमारियों का घर बना सकती है। इसलिए सीमित मात्रा में ही ब्रेड का सेवन करें। वैसे कभी–कभी कुछ शारीरिक समस्याओं के कारण भी लोगों का वजन बढने लगता है, इसलिए बढ़ते वजन की समस्या की असल वजह जानने के लिए डॉक्टर से संपर्क करें।

मधुमेह होने का रहता है खतरा

ब्रेड का अधिक सेवन शरीर में रक्त शर्करा का स्तर बढ़ा सकता है और इससे व्यक्ति के इंसुलिन में भी बदलाव होने लगता है। यह बदलाव मधुमेह का खतरा उत्पन्न कर सकता है। बता दें कि मधुमेह एक गंभीर समस्या है, जो व्यक्ति को मौत के मुंह में भी धकेल सकती है। इसलिए जिन लोगों को पहले से ही मधुमेह है तो वे कम ही ब्रेड का सेवन करें। वहीं, स्वस्थ व्यक्ति भी सीमित मात्रा में ब्रेड खाएं।

हो सकती है ब्लोटिंग की समस्या

अगर आप ब्रेड का अधिक सेवन करते हैं तो इसके कारण आपको ब्लोटिंग की समस्या का भी सामना करना पड़ सकता है। बता दें कि खाने का पाचन ठीक ढंग से न होने के कारण पेट में गैस बनने लगती है और ऐसे में लोगों को पेट फूलने की समस्या से जूझना पड़ता है। पेट फूलने की समस्या को अंग्रेजी में ब्लोटिंग भी कहा जाता है, जिसकी वजह से पेट से जुड़ी कई समस्याएं होने लगती हैं।

कब्ज होना

ब्रेड का अधिक सेवन पाचन तंत्र के स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है क्योंकि पाचन तंत्र ब्रेड की अधिक मात्रा को सही ढंग से पचाने में असमर्थ रहता है। इसके कारण व्यक्ति को कब्ज की समस्या होने की अधिक संभावना रहती है। इसके अलावा, इसकी वजह से गैस और पेट दर्द जैसी कई तरह की समस्याओं से भी जूझना पड़ सकता है। इसलिए भूल से भी ब्रेड का अधिक सेवन न करें।